वर्ष 24 । अंक 1-2 । अगस्त सितम्बर, 2022

बच्चों का देश

ISSN No. 2582-4546

₹ 30

राष्ट्रीय बाल मासिक

अणुविमा

नई पीढ़ी में रचनात्मकता और सकारात्मकता
को प्रोत्साहित करने का राष्ट्रव्यापी अभियान
ANUVRAT
CREATIVITY
CONTEST
प्रतियोगिताएं
लेखन
चित्रकला
गायन
भाषण
विषय
पर्यावरण का संरक्षण
दायित्व हमारा हर क्षण
प्रथम चरण
विजेता प्रतिभागियों की प्रविष्टि अपलोड की
अंतिम तारीख 15 अगस्त 2022
राष्ट्रीय स्तर पर आकर्षक पुरस्कार
ग्रुप-1 : कक्षा 3-5, ग्रुप -2 : कक्षा 6-8, ग्रुप-3 : कक्षा 9-12
अधिक
जानकारी
के लिए
https://anuvibha.org/act
act@anuvibha.org
+91-91166-34514
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

कहाँ क्या?

अंक विशेष

लता मंगेशकर	: तरुण कुमार दाधीच	– 11
होनहार बच्चे	: शिखर चन्द जैन	– 14
महान देशभक्त : चन्द्रशेखर	: हरीशचंद पांडे	– 22
अभियन्ता दिवस पर विशेष	: संतोष कुमार सिंह	– 26
इस मित्रता दिवस पर	: नेहा गुप्ता	– 28
सत्यकथा अदम्य साहस की	: रघुराजसिंह 'कर्मयोगी'	– 33
राष्ट्रमंडल खेल	: अनिल जायसवाल	– 38
कठफोड़वा	: शिवचरण चौहान	– 46

कहानी

मेरी माँ को बचाओ	: रजनीकान्त शुक्ल	– 07
आखिर डरना क्यों	: नीलम राकेश	– 09
गुस्सा थूक दिया	: डॉ. संगीता बलवन्त	– 15
जागता गाँव	: गोपाल माहेश्वरी	– 19
मिल गया जादुई पिटारा	: विमला नागला	– 23
इन्द्र की सलाह	: भूपसिंह भारती	– 31
चिंटू और दादाजी	: नीमा पाठक	– 34
सच्ची देशभक्ति	: डॉ. रंजना जायसवाल	– 35
भलाई का काम	: डॉ. मीरा रामनिवास वर्मा	– 39

कविता-गीत

शेरू के दरबार में	: शिवमोहन यादव	– 06
बोले अपने दादा जी	: प्रकाश मनु	– 10
परमवीर मेजर शैतान सिंह	: डॉ. वेद मित्र शुक्ल	– 13
हारिल पक्षी	: उदय मेघवाल 'उदय'	– 18
राखी बंधन	: पंकज मिश्र 'अटल'	– 18
आएँ बादल	: विज्ञान व्रत	– 18
गिल्लू जी	: निशेश जार	– 30

विविधा

वर्ग पहेली : राधा पालीवाल	– 17	कौनसी राखी किसकी : चाँद मोहम्मद घोसी	– 37
दिमागी कसरत : वसीम अहमद नगरामी	– 21	प्रेरक प्रसंग : पुष्पेश कुमार पुष्प	– 37
बूझो तो जानें : अनिता गंगाधर शर्मा	– 25	चित्र पहेली : धर्मपाल डोगरा 'मिन्टू'	– 40

स्तम्भ

सम्पादक की पाती –05, महाप्रज्ञ की कथाएँ– 06, जीवन विज्ञान के प्रयोग–08, आओ पढ़ें : नई किताबें – 21, दस सवाल : दस जवाब– 29, प्रेरक वचन, अन्तर ढूँढ़िये – 30, सुडोकू–32, व्हाट्सएप कहानी – 37, पढ़ो और जानो, उत्तरमाला – 41, कलम और कूँची– 42, नन्हा अखबार – 44, बच्चों की कलम– 47, चित्र कथा–48, किड्स कॉर्नर– 50, बच्चों का क्लब– 51

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

वर्ष : 24 अंक : 1-2 अगस्त-सितम्बर, 2022

प्रकाशक
अणुव्रत विश्व भारती
सहयोगी संस्थान
भागीरथी सेवा प्रन्यास

सम्पादक | संचय जैन 98290 52452
सह सम्पादक | प्रकाश तातेड़ 93515 52651
प्रबन्ध सम्पादक | निर्मल राँका, पंचशील जैन
कार्यालय | चन्द्रशेखर देराश्री
ग्राफिक डिजायन | गजेन्द्र दाहिमा
चित्रांकन | वेणु वरियाथ

सम्पादकीय कार्यालय

अणुव्रत विश्व भारती (अणुविभा)
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस
पोस्ट बॉक्स सं. 28
राजसमन्द – 313324 (राजस्थान)
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in
9414343100

सदस्यता शुल्क

एक प्रति : 30 रु.
वार्षिक : 300 रु.
त्रैवार्षिक : 800 रु.
पंचवार्षिक : 1200 रु.
दस वर्ष : 2400 रु.
पंद्रह वर्ष : 7000 रु.
(कोरियर द्वारा 300 रु अतिरिक्त प्रतिवर्ष)
विदेश के लिए वार्षिक शुल्क $ 20

प्रकाशक मुद्रक व सम्पादक

संचय जैन द्वारा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमन्द के लिए प्लेजर डिजिटल प्रेस, 10, गुरु रामदास कोलोनी, उदयपुर (राज.) के लिए चौधरी ऑफसेट प्रा. लि. उदयपुर से मुद्रित एवं चिल्ड्रन'स पैलेस, राजसमन्द से प्रकाशित
ISSN No. 2582-4546

सदस्यता शुल्क भेजने के तीन तरीके -

नकद / चैक / ऑनलाइन	UPI	RAZOR PAY
ANUVRAT VISHWA BHARTI SOCIETY IDBI Bank BRANCH Rajsamand A/c No. : 104104000046914 IFSC : IBKL0000104		https://rzp.io/l/uGTBPsrRx

Send Payment Information On Whatsapp No. 9116634513

'बच्चों का देश' मासिक में प्रकाशित रचना व चित्र सहित समस्त सामग्री के प्रकाशन का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लिखित अनुमति प्राप्त कर इनका उपयोग किया जा सकता है। समस्त कानूनी मामलों का न्याय क्षेत्र केवल राजसमन्द होगा।

सम्पादक की पाती

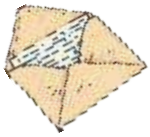

प्यारे बच्चो,

मुक्ति की स्कूल में आज एक खास कार्यक्रम था। ''आजादी का अमृत महोत्सव'' पर प्रसिद्ध मोटिवेशनल स्पीकर को विशेष रूप से बुलाया गया था। स्पीकर ने देश की आजादी के महत्त्व को बताया। हमारे स्वतन्त्रता सेनानियों के त्याग और बलिदान की बातें बताई। उन्होंने यह भी कहा कि देश को आजाद हुए 75 वर्ष हो गए हैं लेकिन असली आजादी अब भी बाकी है।

मुक्ति सोच में पड़ गई। यह असली आजादी क्या है? अँग्रेज तो चले गए फिर अब असली आजादी हमें किससे चाहिए? वह अपने आप को रोक न सकी और प्रश्न पूछने के लिए हाथ उठा दिया। अकसर बच्चे प्रश्न पूछने से डरते हैं। लेकिन मुक्ति को उसके मम्मी-पापा ने समझा रखा था कि प्रश्न पूछने से घबराना नहीं चाहिए। यह सोच कर कि दूसरे क्या कहेंगे, हम अपनी प्रगति में ही बाधक बनते हैं।

जैसे ही स्पीकर ने मुक्ति को हाथ उठाए देखा, बोले- ''कहो बेटी, कुछ पूछना चाहती हो?'' मुक्ति खड़ी हुई और बोली- ''सर, क्या हमें जो आजादी मिली थी वो नकली थी? असली आजादी क्या होती है? वह हमें कैसे मिलेगी सर?'' मुक्ति के प्रश्नों से खुश होकर स्पीकर ने कहा- ''शाबास! मुझे ऐसे ही प्रश्नों का इन्तजार था।''

उन्होंने स्पष्ट करते हुए कहा- ''15 अगस्त 1947 को हम विदेशी शासन से आजाद हुए लेकिन हमें असली आजादी तब मिलेगी जब हम अपने भीतर की बुराइयों से आजाद होंगे। जब तक हमारे मन पर बेईमानी, दूसरों के प्रति घृणा, शत्रुता और ईर्ष्या, डर और लालच का राज रहेगा, तब तक हम इन बुरी शक्तियों के गुलाम ही बने रहेंगे। हम सही माने में आजाद नहीं होंगे।''

मुक्ति का अगला प्रश्न था- ''इन बुरी शक्तियों से आजादी हमें कैसे मिल सकती है सर?'' जिस निडरता से मुक्ति प्रश्न कर रही थी उससे स्पीकर बहुत प्रभावित हुए, बोले- ''बस इसी निडरता से हमें प्रश्न करते रहना होगा। दूसरों से और स्वयं से भी। स्वयं से प्रश्न पूछते रहना सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है ताकि हम कभी भी गलत रास्ते पर न जाएँ। निज पर शासन, यानी खुद पर नियन्त्रण रख सकें। जब हमारे मन पर हमारा पूर्ण नियन्त्रण होगा तभी हम असली आजादी का अनुभव कर सकेंगे।''

''थैंक यू सर!'' कह कर मुक्ति बैठ गई। पूरा हॉल तालियों से गूँज उठा। ये तालियाँ स्पीकर सर के लिए तो थी ही, आत्मविश्वास से भरी मुक्ति के लिए भी थी।

प्यारे बच्चो, स्पीकर सर की बातों से हम सबको सीख लेनी है। असली आजादी हमारे अपने हाथों में है। यही असली आजादी हमें और हमारे देश को आतंकवाद, भ्रष्टाचार, मारकाट, धार्मिक कट्टरता, ऊँची और नीची जाति के भेद, गरीबी, भुखमरी और बेरोजगारी जैसी बुराइयों से आजाद कर सकेगी।

आपको स्वतन्त्रता दिवस की ढेरों शुभकामनाएँ।

आपका ही,

संचय

महाप्रज्ञ की कथाएँ

स्वशक्ति का विवेक

एक सेठ था। उसके दो लड़के थे। सेठ ने सोचा– किसको उत्तराधिकारी बनाऊँ ? उसे परीक्षा लेनी चाहिए। वह बहुत सम्पन्न था। उसने दोनों बेटों को पाँच–पाँच लाख रुपए दिए और कहा– ''जाओ, इन रुपयों से अपने राज्य के प्रत्येक शहर में एक–एक कोठी बनाओ और तीन माह के भीतर मुझे सूचना दे दो।''

वे दोनों गए। राज्य में अनेक शहर थे। तीन माह बीत गए। एक लड़का आया। वह थका–माँदा था, सुस्त था। सेठ ने पूछा– ''कोठियाँ बना दी?'' उसने कहा– ''हाँ, कुछ शहरों में बनवाई हैं। सब शहरों में कैसे बनवा पाता? आपने जो धन दिया, वह तो तीन–चार कोठियों के निर्माण में ही पूरा हो गया।''

इतने में दूसरा बेटा भी आ गया। वह प्रसन्न दिख रहा था। सेठ ने पूछा– ''कितनी कोठियाँ बनवायी?'' उसने कहा– ''पिताजी सभी शहरों में कोठियाँ बनवा दी हैं।'' ''कितना व्यय हुआ?'' सेठ ने पूछा। बेटे ने कहा– ''कुछ नहीं लगा। पाँच लाख वैसे के वैसे पड़े हैं।'' ''कैसे किया तुमने?'' सेठ ने पूछा। वह बोला– ''सभी शहरों में मैंने मित्र बनाए। इतने गहरे मित्र कि उन सबकी कोठियाँ मेरी अपनी कोठियाँ हैं। जब चाहें वहाँ जा सकते हैं।'' पिता इस पुत्र की बुद्धि व चतुराई पर प्रसन्न हुआ।

कथाबोध– जहाँ विवेक होता है वहाँ सफलता सहज ही मिल जाती है।

शेरू के दरबार में

शिवमोहन यादव
कानपुर (उत्तर प्रदेश)

इक झगड़े की बहस छिड़ी थी,
शेरू के दरबार में।
चूहे ने चुहिया को मारा,
बिना बात बेकार में।

शेरू दादा सिंहासन पर,
सुनते थे फरमान सभी।
चुहिया रोई, खड़े हुए फिर,
सब लोगों के कान तभी।
बोली– शेरू बहुत दुःखी हूँ
तेरी इस सरकार में।...

सब घबराये, कैसी चुहिया,
लड़ती है महाराज से।
सनक गये तो दाना–पानी,
नहीं मिलेगा आज से।
लेकिन चुहिया हटी न पीछे,
चूहे से तकरार में।...

चुहिया बोली– मैं ना चाहूँ,
रुपया, पैसा, कार कभी।
सब कुछ इनको दे दो लेकिन,
नहीं सहूँगी मार कभी।
सुधरे न तो, करवाऊँगी,
जेल एक ही बार में।...

शेरूजी ने बीच बहस में,
चूहे को बुलवाया फिर।
तब आगे आकर चूहे ने,
अपना पक्ष सुनाया फिर।
कोई ऊँची बात नहीं थी,
मार दिया था प्यार में।...

जिसने सुना वही मुसकाया,
मीठी इस तकरार में।
शेरू बोले– कभी न लड़ना,
अब तुम ऐसे प्यार में।
बात बड़ी थी, सुलझ गई थी,
शेरू के दरबार में।...

साहसी बच्चे

मेरी माँ को बचाओ

केरल राज्य के पलक्काड़ जिले में भरत पूजा नदी के किनारे लक्किड़ी गाँव बसा हुआ है। गाँव और नदी के साथ–साथ रेलवे लाइन भी है। एक दिन दोपहर बाद विष्णु और उसका चचेरा भाई साइकिल सीखने के लिए नदी और रेलवे ट्रेक के किनारे की सड़क के पास चल दिए।

साइकिल चलाने की ट्रेनिंग शुरू हो चुकी थी। सीखते समय जब छोटा भाई जल्दी करने लगा। तब विष्णु ने मुस्कुराकर कहा– ''भाई, इसमें एकदम से कुछ नहीं होता है। धैर्य रखो। पहले इसे देखो, समझो, सीखो और फिर अभ्यास करो। गिरने के डर से बिना सीखे मत भाग जाना।'' जब वे थकने लगे तो उन्होंने आज की ट्रेनिंग खतम कर घर जाने का विचार किया। भाई ने एक दो बार गिरकर भी लगातार प्रयास जारी रखे थे। वह बहुत उत्साहित था। उसे लग रहा था कि वह जल्दी की साइकिल चलाना सीख जाएगा।

इतने में उन्हें किसी नन्हे बच्चे की जोर की चीखने की आवाज सुनाई दी। ऐसा लगा कि कोई संकट में फँसा हुआ मदद के लिए पुकार रहा हो। विष्णु ने साइकिल भाई के सहारे छोड़कर आवाज की दिशा में भागना शुरू कर दिया। पटरी के साथ–साथ करीब सौ मीटर दौड़कर चलते ही वह भरत पूजा नदी के किनारे जा पहुँचा। उसने देखा कि एक दस साल की लड़की मदद के लिए पुकार रही थी और सामने नदी में दो बच्चे नदी में डूब रहे थे।

विष्णु ने जैसे ही यह दृश्य देखा उसने देर नहीं लगाई और वह तुरन्त नदी में कूद गया। वह तैरता हुआ जल्दी ही उनमें से एक के पास जा पहुँचा और उसने उस डूब रही बारह साल की लड़की को खींचकर किनारे तक ला दिया। फिर अगले चक्कर में वह दूसरे बच्चे को भी निकाल लाया। यह करीब आठ साल का एक लड़का था। नदी में पानी तेज था मगर डूबते की जान बचाने का उत्साह विष्णु को लगातार लगाए रहा।

विष्णु के प्रयास से वे दोनों बच्चे सुरक्षित पानी से बाहर आ चुके थे। तभी वह सहायता के लिए पुकारने वाली लड़की फिर से चिल्लाई– ''मेरी माँ को भी बचाओ। वह भी डूब रही है।'' विष्णु ने पूछा– ''तुम्हारी माँ किधर है?'' उसने हाथ से एक ओर इशारा किया। विष्णु फिर से पानी में कूदकर उस लड़की की माँ को खोजने लगा। थोड़े प्रयासों के बाद उसे वे मिल गईं। वे बेहोश थीं और पत्थरों के बीच फँसी थीं। उनमें वजन था इसलिए बड़ी मुश्किल से विष्णुदास उनके बालों को पकड़कर उन्हें किनारे तक लाने में सफल हो सका।

अब तक उस लड़की के चीखने और शोरगुल की आवाजों से कुछ लोग नदी तट तक आ चुके थे। उन्होंने उन तीनों को प्राथमिक सहायता देने की कोशिश की। दोनों बच्चों को तो कुछ देर में होश आ गया। मगर उस महिला की बेहोशी नहीं टूटी। जल्दी ही उसे अस्पताल ले जाया गया। डाक्टरों ने उन्हें बचाने के बड़े प्रयास किए मगर उन्हें न बचाया जा सका।

देखें पृष्ठ 13...

जीवन विज्ञान के प्रयोग

मुद्रा का प्रभाव

मुद्रा और भाव में गहरा सम्बन्ध है। जैसा भाव होता है, वैसी ही मुद्रा बन जाती है। जैसी मुद्रा बनाते हैं, वैसा ही भाव बनने लगता है जैसा भाव होता है वैसे ही स्राव होने लगते है। जैसे स्राव होते हैं वैसा ही भाव बन जाता है। इसलिए सही मुद्राओं का प्रयोग करना चाहिए, जिससे भावों और स्रावों में सन्तुलन बना रहे।

आलस्य एवं जागरूक मुद्रा

आलस्य की मुद्रा से आलस्य बढ़ता है। एक बालक को सुबह जगाया जाता है। वह आलस्य से भरा है। चादर ओढ़ कर औंधे मुँह सो जाता है। सिर उठाने पर भी आलस्य का त्याग नहीं करता, अपितु पुनः सो जाता है। आलस्य के कारण सुस्ती के भाव प्रकट होते हैं। बालक को आलस्य की मुद्रा का त्याग कर जागरूक मुद्रा बनानी चाहिए।

दूसरे लड़के को सुबह जगाया जाता है। वह तुरन्त उठकर इष्ट का स्मरण कर हाथ की रेखाओं को देखता है और जागरूक बनता है। ताड़ासन की तरह दाएँ–बाएँ तथा ऊपर की ओर तनाव देता है, फिर वह अपनी दिनचर्या के अनुसार काम में लग जाता है। यह जागरूक मुद्रा कहलाती है।

शिष्ट एवं अशिष्ट मुद्रा

जिसके भावों में निर्मलता ओर विनम्रता होती है वह प्रियजनों के मिलते ही शिष्ट मुद्रा बना लेता है। वह अपने माता–पिता, शिक्षक एवं उम्र में बड़ों को हाथ जोड़कर प्रणाम करता है। नम्रता पूर्वक उनसे बात

करता है।

जिसके भाव अशिष्ट होते हैं वह अहंकार के कारण शिष्टाचार नहीं निभा पाता। वह अपने से किसी को बड़ा नहीं मानता। न वह हाथ जोड़ता है और न ही झुकता है, बल्कि अकड़ा हुआ दोनों हाथों को दाएँ–बाएँ काँख में डालकर खड़ा हो जाता है। यह अशिष्ट मुद्रा अशिष्ट भावों को उजागर करती है।

विद्या अर्जन की मुद्राएँ

पहला लड़का कुर्सी या आँगन पर सही आसन में बैठता है। पुस्तक को एकाग्रता से पढ़ता है। उसकी एकाग्रता और ज्ञानार्जन के भावों की सही मुद्रा बनती है। सही मुद्रा में पाठ पढ़ने वाला बालक एक घंटे में याद होने वाले पाठ को आधा घंटे में ही याद कर लेता है। सही मुद्रा से सजगता व कुशलता बढ़ जाती है।

दूसरा लड़का पीठ के बल सोया–सोया किताब को पढ़ रहा है। चित्त किताब पर पूरा एकाग्र नहीं हो पाता। आँखों से किताब को दूर रखने के लिए हाथों को ऊपर उठाकर किताब को रखना होता है। रोशनी पुस्तक पर कम गिरती है। आँखों पर सीधा प्रकाश पड़ता है। आँखें खराब होने का डर रहता है। यह पढ़ने की गलत मुद्रा है। इससे पढ़ने में अरुचि पैदा होती है। संकल्प शक्ति व सही मुद्रा के द्वारा इसे ठीक किया जा सकता है।

आखिर डरना क्यों!

लिली और कुहू पार्क में जाकर झूला झूल रही थी। दोनों बहुत खुश थी। तभी कुहू की नजर सामने से आते हुए अंकल पर पड़ी। "वो देखो लिली, तुम्हारे अंकल आज नीली शर्ट पहन कर आ रहे हैं।" आँख से इशारा करते हुए कुहू बोली।

"हूँ... मेरे अंकल क्यों? तुम्हारे भी तो अंकल हुए।" लिली ने सिर हिलाया। "हूँ, मुझे तो अच्छे नहीं लगते। मैं तो उनसे कभी बात नहीं करती। तुम ही जाकर उनकी गोद में बैठ जाती हो।" कुहू ने मुँह बनाया। "वो मुझे जबरदस्ती बैठा लेते हैं।" लिली ने अपनी सफाई दी। "अरे! ऐसे कैसे? मेरी मम्मी कहती हैं, हम लोग स्ट्रांग लड़कियाँ हैं। हमें किसी की गलत बात मानने की जरूरत नहीं है।" जोर देकर कुहू बोली। "तो फिर मैं क्या करूँ?" लिली ने पूछा।

"आज साफ–साफ मना कर देना कि तुम्हें गोद में बैठना पसन्द नहीं।" कुहू ने समझाया। "मैं ऐसे नहीं बोल पाऊँगी। मेरी मम्मी कहती है बड़ों के साथ आदर से बात करनी चाहिए।" लिली ने अपनी परेशानी बताई। "तुम्हारी मम्मी सही कहती है। पर ये बात अच्छे लोगों पर लागू होती है। मुझे तो ये अंकल बिलकुल सही नहीं लगते।" कुहू बोली। "कुहू, वो देखो बुला रहे हैं। अब हम क्या करें?" लिली घबराकर बोली।

"बुलाने दो। आज हम उनके पास नहीं जाएँगे। चलो घर चलते हैं।" दृढ़ता से कुहू बोली। "लेकिन कुहू, वो मेरे लिए चॉकलेट लाए होंगे।" हिचकिचाहट के साथ कुहू बोली– "अरे, तुम मूर्ख हो क्या? उनसे लेकर कुछ भी खाने की जरूरत नहीं है। चल घर चलें।" कहते हुए कुहू झूले पर से उतरकर लिली का हाथ पकड़ घर की ओर चल दी। "लिली, लिली, लिली" नीली शर्ट वाले अंकल पुकारते रहे। पार्क से बाहर आकर लिली बोली– "आज तो तुम मेरे साथ थी। कल मैं क्या करूँगी?" डर साफ लिली के चेहरे पर दिखाई दे रहा था।

"हम कल से इस पार्क में आएँगे ही नहीं। घर पर ही खेलेंगे।" कुहू ने अपना फैसला सुनाया। "लेकिन कुहू, ये तो हमारे बस के कंडक्टर है। बस में हमारे साथ जाते हैं। और रोज मुझे अपने पास ही बैठाते हैं।" लिली बोली। "क्यों? ये तुम्हारे बस के कंडक्टर हैं? तुमने अपनी मम्मी को क्यों नहीं बताया?" आश्चर्य से कुहू बोली। बात करते–करते दोनों कुहू के घर पहुँच गई थी।

"कुहू, क्या नहीं बताया, लिली ने अपनी मम्मी को?" लिली के कटे बालों में हाथ फिराते हुए

देखें पृष्ठ 13...

बोले अपने दादा जी

आओ बच्चो, तुम्हें बताऊँ
कथा पुरानी भारत की,
इतिहासों को बदला जिसने
वही कहानी भारत की!
जिसने सबको ज्ञान सिखाया
एक समय था ऐसा,
समझ न पाओगे भारत का
परचम था तब कैसा।

सोने की चिड़िया कहलाता
था तब देश हमारा,
सारे जग में झिलमिल करता
खुशियों का ध्रुवतारा।
लेकिन नजर पड़ी दुश्मन की
हुए वार पर वार,
खुशियों पर कालिख चढ़ आई
फैल गया अँधियार।

क्रूर फिरंगी की लाठी से
खाई सबने मार,
सिसक उठी थी भारत माता
कैसा अत्याचार!
हाय, गुलामी की वह पीड़ा
मैं कैसे समझाऊँ,
बिलख रही थी जनता सारी
बस, इतना बतलाऊँ।

यह है करुण कहानी, बच्चो!
बोले अपने दादा जी।

दुःख के लाख थपेड़े झेले
फिर पाई आजादी,
आँधी बनकर आए बापू
लेकर चरखा–खादी।
उनकी सुनी पुकार, देश की
जनता थी तब जागी,
डरकर तभी फिरंगी सेना
थी भारत से भागी।

कहीं न फिर से दस्तक दे दे
बेहाली, बरबादी,
कहीं न फिर से खतरे में
पड़ जाए यह आजादी।
सीमा पर दुश्मन बैठा है
अब भी घात लगाए,
घोर गरीबी सुरसा बनकर
बैठी मुँह फैलाए।

याद हमें पर रखना होगा
अब इतिहास पुराना,
सावधान रह बुनना होगा
कल का ताना–बाना।
जागोगे तुम बच्चो, तो यह
देश बनेगा अच्छा,
कल का भारत सोने जैसा
सपना होगा सच्चा।

लिख दो नई कहानी, बच्चो!
बोले अपने दादा जी।

प्रकाश मनु
फरीदाबाद (हरियाणा)

बालक बना महान

सुर साम्राज्ञी, भारत रत्न
लता मंगेशकर

बच्चो, कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो दृढ़ निश्चय, अटूट लगन और एकनिष्ठा से ऐसे काम कर जाते हैं जिससे अपना नाम इतिहास में सुनहरे अक्षरों में दर्ज करा जाते हैं। ऐसी ही एक महान विभूति पार्श्व गायिका लता मंगेशकर थी।

लता मंगेशकर का जन्म 28 सितम्बर 1929 को इन्दौर (मध्य प्रदेश) में हुआ। इनके पिता का नाम पंडित दीनानाथ मंगेशकर और माता का नाम शेवंती था। लता मंगेशकर का पूरा परिवार कला और संगीत के लिए समर्पित रहा। दीनानाथ मंगेशकर एक अच्छे कलाकार, शास्त्रीय गायक और पटकथा लेखक होने के साथ साथ कुशल रंगकर्मी थे। उन्होंने कई नाटकों का सफल मंचन किया। पाँच भाई बहिनों में लता जी सबसे बड़ी थीं। उनके बाद मीना, आशा, उषा और हृदयनाथ का जन्म हुआ।

न भूतो न भविष्यति

लता मंगेशकर ने पिछले सात दशक से पार्श्व गायिका के रूप में नवीन कीर्तिमान स्थापित किए। इस अद्वितीय प्रतिभा के कारण उनके लिए यही कहा जाता है कि उनके जैसा न कोई पहले हुआ और न आगे कोई होगा।

लता मंगेशकर ने कई भाषाओं में गीत गाए। विश्वास नेरूरकर ने अपने प्रकाशित गीत संग्रह 'लता मंगेशकर : गंधार स्वर यात्रा' में 1945 से 1989 तक 20 भारतीय भाषाओं में उनके द्वारा गाए 5066 गानों का उल्लेख किया है। आगे चलकर उनके गाए गानों में वृद्धि होती गई।

पहले थीं हेमा हार्डीकर

प्रतिष्ठित पार्श्व गायिका लता मंगेशकर का बचपन का नाम हेमा हार्डीकर था। उनके पिता दीनानाथ जी अपने नाम के साथ हार्डीकर लगाते थे किन्तु उन्होंने इसे बदल कर मंगेशकर कर लिया क्योंकि दीनानाथ जी गोआ में मंगेशी के रहने वाले थे। बचपन से ही लता को घर में गीत–संगीत और कला का माहौल मिला, वे उसी ओर आकर्षित हुई। जब हेमा पाँच साल की थी तब पिताजी ने उन्हें संगीत की शिक्षा देना प्रारम्भ कर दिया था। हेमा पिताजी के नाटकों में अभिनय करने लगी। लेकिन हेमा को अभिनय करना पसन्द नहीं था। फिर भी आर्थिक स्थिति के कारण उन्होंने कुछ हिन्दी और मराठी फिल्मों में अभिनय किया। दीनानाथ जी ने 'भाव बंधन' नाटक की नायिका लतिका के नाम से प्रभावित हो कर हेमा का नाम लता रख दिया। लता को स्कूल भेजा गया लेकिन पहले ही दिन उनकी टीचर से अनबन हो गई।

लता का पहला गाना

एक मराठी फिल्म के लिए 1942 में उन्हें गाना गाने का पहला अवसर मिला। कुछ मराठी फिल्मों में गाने के बाद 1949 में खेमचंद प्रकाश के संगीत निर्देशन में 'महल' फिल्म का गाना 'आएगा आने वाला' गाना गाकर सभी को सम्मोहित किया। यह गीत सुपरहिट रहा और आज भी लता जी के बेहतरीन गानों में शुमार है।

लता एकमात्र जीवित व्यक्तित्व थी जिनके नाम से पुरस्कार दिये जाते हैं। उन्होंने आनन्दधन

बैनर तले फिल्मों का निर्माण किया और संगीत दिया। वे स्टुडियो व स्टेज पर रेकार्डिंग व प्रस्तुति नंगे पाँव ही जाती थी। लताजी ने 1980 के बाद फिल्मों में गाना कम कर दिया था।

लता जी का संघर्ष

जब लता जी पार्श्व गायक के रूप में अपना केरियर बना रही थी, उस समय शमशाद बेगम, नूरजहाँ जैसी गायिकाओं की धाक थी। यद्यपि लता जी पर इन दोनों गायिकाओं का गहरा प्रभाव था फिर भी उन्होंने आगे बढ़ने के लिए अपनी नवीन शैली विकसित की। इसके लिए लता जी ने हिन्दी व उर्दू के उच्चारण सीखे। इस प्रकार 1950 से 1970 के बीच बेहतरीन गीतकारों और संगीतकारों के सम्पर्क में रहकर लता जी ने एक से बढ़कर एक गीत गाए। उस समय शंकर जयकिशन, अनिल बिस्वास, एस.डी. बर्मन, सलिल चौधरी, खय्याम, कल्याणजी आनंदजी, लक्ष्मीकांत प्यारेलाल, आर.डी. बर्मन, जयदेव, रवि आदि ने लता जी को खूब अवसर प्रदान किए। इस अवधि में लता जी की लोकप्रियता दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ने लगी और वे उच्चकोटि की पार्श्व गायिका बन गई।

पारिवारिक दायित्व

पारिवारिक जिम्मेदारियों के चलते लता जी ने विवाह नहीं किया। दीनानाथ जी के निधन के बाद 13 वर्ष की उम्र में ही लता जी पर परिवार का बोझ आ गया। लता जी ने किशोरावस्था में गहराई से विचार किया कि यदि विवाह कर लेंगी तो छोटे भाई बहिनों का ध्यान कौन रखेगा! परिवार के लिए ऐसे अनुपम त्याग कम ही देखने को मिलते हैं। समय बीत जाने के बाद उन्होंने विवाह का विचार अपने मन से निकाल दिया। वे सी.रामचंद्र, के.एल.सहगल आदि से बहुत प्रभावित थी। फिल्मी दुनिया में सभी उनका आदर और सम्मान करते थे। फिल्मों में उनके गाए गानों पर निर्माता निर्देशक गौरव का अनुभव करते थे। यह लता जी के साथ–साथ उनकी प्रतिभा का भी सम्मान था।

पुरस्कार एवं सम्मान

भारत सरकार द्वारा लता मंगेशकर को 1969 में पद्मभूषण, 1989 में दादा साहब फाल्के पुरस्कार, 1999 में पद्म विभूषण और 2001 में भारतरत्न सम्मान एवं 2008 में भारत की स्वतन्त्रता की 60 वीं वर्षगाँठ के अवसर पर 'वनटाइम अवार्ड फॉर लाइफटाइम अचीवमेंट' प्रदान किया गया। इसके अलावा उन्होंने कई बार राष्ट्रीय फिल्मफेयर पुरस्कार, महाराष्ट्र राज्य फिल्म पुरस्कार, बंगाल फिल्म जर्नलिस्ट एसोसिएशन अवार्ड आदि प्राप्त किये।

आखिरी गाना

लता मंगेशकर ने कई फिल्मी और गैरफिल्मी गीत गाए। जब लता जी ने लाल किले पर 'ऐ मेरे वतन के लोगों, जरा आँखों में भर लो पानी' गीत सुनाया तब उपस्थित श्रोताओं की आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। उनकी सुरीली आवाज के लिए उन्हें माँ सरस्वती की पुत्री एवं स्वर साम्राज्ञी कहा जाता है। उन्होंने कई भाषाओं में गीत गाए जो अपने आप में कीर्तिमान है।

भारतीय सेना को श्रद्धांजलि के रूप में लता जी ने 2019 में फिर से उसी गीत को रिकार्ड किया जो उनके द्वारा टेप किया हुआ उनका आखिरी गाना था। इस गाने का मुखड़ा 'सौगंध मुझे इस मिट्टी की' था जिसे संगीतकार मयूरेश पई ने संगीतबद्ध किया।

लता मंगेशकर भारत ही नहीं विश्व में अत्यधिक लोकप्रिय व प्रतिष्ठित रही। आपके दुनिया भर में करोड़ों प्रशंसक हैं। लता जी को माँ सरस्वती का अवतार मानते हैं। अपने जीवन में अनेक कीर्तिमान स्थापित करने वाली सुर की मल्लिका लता मंगेशकर जी का 6 फरवरी 2022 को निधन हो गया। आज लता जी हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनके गाए गीत जन–जन की जिह्वा पर अमिट रूप से विद्यमान रहेंगे।

तरुणकुमार दाधीच
उदयपुर (राजस्थान)

परमवीर चक्र विजेता

मेजर शैतान सिंह

हाँ, मेजर शैतानसिंह जी,
अमर रहेंगे प्यारे बच्चो,
अमित शौर्य की उनकी गाथा
सदा कहेंगे प्यारे बच्चो।

सौ के आस पास सैनिक ले
युद्ध लड़ा था यों मेजर ने,
थे हजार दुश्मन सैनिक पर
उनके आगे आए झुकने।

नायक बन सेना का उनने
किए दाँत खट्टे दुश्मन के,
लगी गोलियाँ तन पर फिर भी
खड़े रहे बच्चो वो तन के।

कर्त्तव्यों के पथ से उनको
सच में कोई डिगा न पाया,
आखिर में बलिदान हुए औ'
बच्चो! परमवीर था पाया।

डॉ. वेद मित्र शुक्ल, नई दिल्ली

'मेरी माँ को बचाओ' पृष्ठ 7 का शेष....

पता चला कि वह महिला शीबा जीनत थी और अपने बच्चों अंसिया, हरशद और नसरीन के साथ नदी के किनारे कपड़े धोने और नहाने के लिए आईं थीं। किनारे से पैर फिसल जाने के कारण जब हरशद नदी में बहने लगा तो उसे बचाने के लिए उसकी बड़ी बहन नसरीन और उसके बाद माँ शीबा कूद गई थी।

जब वे डूबने लगीं तो अंसिया ने चिल्लाकर मदद की गुहार लगाई थी जिसे सुनकर विष्णु भाई के पास साइकिल छोड़कर दौड़ा चला आया था। उसने खतरे में फँसे हुए तीन जीवन बचाने का पूरा प्रयास किया। इस अपार साहस और कर्त्तव्य परायणता को देखते हुए उसे वर्ष 2010 का राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार प्रदान किया गया जो देश के प्रधानमन्त्री जी ने देश की राजधानी में गणतन्त्र दिवस के अवसर पर उसे प्रदान किया।

रजनीकान्त शुक्ल
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

Heart is not a basket for keeping tension and sadness. It is a golden box for keeping roses of happiness and sweet memories.

'आखिर डरना क्यों' पृष्ठ 9 का शेष....

कुहू की मम्मी ने पूछा। "क... क...। कुछ नहीं आंटी।" हड़बड़ाकर लिली बोली। "माँ से कभी कुछ नहीं छुपाते बेटा। बात अच्छी हो या बुरी, सब माँ को बताना चाहिए।" कुहू की मम्मी बोली।

बच्चों से पूरी बात जानकर कुहू की मम्मी दोनों को लेकर लिली के घर चली गयी। अगले दिन कॉलोनी का कोई भी बच्चा बस से स्कूल नहीं गया। सभी बच्चे अपने माता–पिता के साथ स्कूल पहुँचे। बच्चों को क्लास में भेजकर वे प्रिंसिपल से मिले और सारी बात बताई। प्रिंसिपल को भी बस कंडक्टर का बालिकाओं के साथ व्यवहार संदेहपूर्ण लगा।

प्रिंसिपल चकित और दुःखी दोनों थी। "मुझे खुशी है कि आप लोगों ने इतनी महत्त्वपूर्ण बात मेरे ध्यान में लाई। कुहू की जितनी तारीफ करूँ कम है।" "हाँ सही कह रही है आप।" लिली की मम्मी बोली। "इस कंडक्टर को तो हम निकाल देंगे। लेकिन उससे भी महत्त्वपूर्ण बात ये है कि हम अपने बच्चों को इस तरह की परिस्थितियों के लिए सतर्क रहना सिखाएँगे।" प्रिंसिपल बोली।

"हम लोग भी कोशिश करेंगे कि अपने बच्चों को यह विश्वास दे पाए कि वे अपने मन की हर बात बिना संकोच के हमसे कर सके।" लिली की मम्मी बोली। एक नए विश्वास के साथ सभी माता–पिता स्कूल से बाहर आ गए।

नीलम राकेश
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

डिलोन

हाथ से लिखी पहली पुस्तक से चर्चित

कक्षा 2 के छात्र 8 वर्ष के डिलोन हेलबिग ने इन दिनों अपने शहर (अमेरिका के इदाहो स्टेट) में अपनी प्रतिभा की धूम मचा रखी है। उसने अपनी एक नोटबुक में 81 पृष्ठों पर रंग–बिरंगे चित्रों के साथ एक कहानी लिख डाली। नोटबुक पर शीर्षक लगाया– ''एडवेंचर्स ऑफ डिलोन हेलबिगश्स क्रिसमिस'' और नीचे लिखा– ''बाई डिलोन हिज सेल्फ।''

चुपके से रखी पुस्तकालय में

यह रंगबिरंगी नोटबुक पूरी तरह से तैयार हो गई तो डिलोन घूमने का बहाना बनाकर अपनी दादी के साथ ऐडा कम्युनिटी लाइब्रेरी की लेक हैजल शाखा में गया। वहाँ उसने चुपके से अपनी इस नोटबुक को एक बुकशेल्फ में रख दिया। इस बात का न तो उसकी दादी को पता चला और न लाइब्रेरियन को। दो दिनों बाद वह नोटबुक को मिस करने लगा तो उसने मम्मी सुजैन हेलबिग को यह बात बताई। वे उसे लेकर लाइब्रेरी गईं। लेकिन उसकी किताब वहाँ नहीं थी। सुजैन ने लाइब्रेरियन से विनती की कि किसी को बुक मिले तो उसे फेंके नहीं।

पुस्तक ने सबको किया इंप्रेस

उनके जाने के बाद लाइब्रेरी मैनेजर और उनके साथियों ने उस नोटबुक को खोज निकाला और उसे पढ़ा। उन्होंने पाया कि वाकई डिलोन ने आकर्षक चित्रों के साथ एक शानदार और रोमांटिक कहानी लिख डाली थी। यह कहानी डिलोन के बारे में थी जिसने क्रिसमस ट्री पर चमकने वाले और एक्सप्लोड करने वाले सितारे लगा दिए थे और थैंक्स गिविंग डे पर नॉर्थ पोल की काल्पनिक यात्रा पर निकल गया था। लाइब्रेरियन को कहानी बेहद दिलचस्प और मनोरंजक लगी। उसने नोटबुक घर पर लाकर अपने 6 वर्षीय बेटे क्रूजने को पढ़ने के लिए दी। उसने पुस्तक पढ़कर कहा कि– ''उसकी अब तक पढ़ी हुई किताबों में यह सबसे मजेदार और रोमांचक किताब है।''

लाईब्रेरी का हिस्सा बनी किताब

लाइब्रेरी मैनेजर ने इस बात से डिलोन के माता–पिता को अवगत कराते हुए उनसे अनुमति माँगी ताकि इसे एक बार कोड के साथ लाइब्रेरी में आधिकारिक रूप से रखा जा सके। डिलोन और उसके माता–पिता को यह जानकर बड़ी खुशी हुई। अब यह पुस्तक किड्स, टीन्स और वयस्कों की ग्राफिक नोवेल्स खंड का हिस्सा है।

मिला बेस्ट यंग नोवेलिस्ट का पुरस्कार

डिलोन को लाईब्रेरी का अब तक का पहला बेस्ट यंग नोवेलिस्ट का पुरस्कार ''व्हूडीनी अवार्ड'' मिला है। पुरस्कार की यह श्रेणी विशेष रूप से डिलोन के लिए तैयार की गई है। इसका नामकरण लाइब्रेरी के आउल मैस्कट के ऊपर रखा गया है। डिलोन की पुस्तक इतनी चर्चित हो चुकी है कि इसे पढ़ने के लिए 55 लोगों की वेट लिस्ट तैयार हो गई है।

सहपाठियों को दे रहा ट्रेनिंग

डिलोन के माता–पिता इसके ई वर्जन पर विचार कर रहे हैं। डिलोन इस वक्त इस पुस्तक के सिक्वल को लिखने के साथ–साथ कई दूसरी किताबों पर भी काम कर रहा है। वह अपने सहपाठियों को भी कहानी लिखने के लिए प्रशिक्षण देता है।

शिखर चन्द जैन
कोलकाता (प.बंगाल)

गुस्सा थूक दिया

रिक्की, विक्की दोनों जुड़वाँ भाई थे। एक साथ खेलते थे और बात–बात पर झगड़ते भी थे। इनकी बालसुलभ नोक–झोक देख–सुनकर मन गुदगुदा जाता। अरुणा दीदी इनकी पड़ोसी थी। अरुणा दीदी जब छत पर रहती और रिक्की, विक्की भी अपने छत पर आते तो वह उनकी शरारतें अपनी छत से जरूर देखती।

अभी दोनों भाई कक्षा दो में पढ़ते थे। दोनों से बात करके मन बहुत प्रसन्न होता था पर इन दोनों में विक्की से बात करना और अधिक रोचक लगता था। वह शब्दों को नासमझी में उलट–पुलट देता था जिसे सुनकर बहुत आनन्द आता।

एक दिन रिक्की, विक्की सर्दियों के मौसम में छत पर धूप में बैठकर सब्जी–रोटी खा रहे थे। तभी अरुणा दीदी अपनी छत पर पहुँची और पूछा– ''क्या खा रहे हो रिक्की–विक्की?'' ''निनोना की सब्जी और रोटी खा रहा हूँ, दीदी।'' विक्की खाते हुए ही बोला। ''निनोना की सब्जी? भला ये कौन सी सब्जी होती है।'' अरुणा दीदी ने यह सोचते हुए विक्की से पूछा– ''ये निनोना क्या होता है विक्की? मैंने तो इसकी सब्जी कभी नही खाई। निनोना कैसा होता है, मैंने तो ये सब्जी अब तक देखी भी नहीं।''

''किचन में मेरी मम्मी ने निनोना रखी हैं। मैं अभी लाकर आपको दिखाता हूँ।'' अपना खाना खत्म करते हुए विक्की दौड़कर छत से नीचे गया और फटाफट एक निनोना लेकर ऊपर आया और अरुणा दीदी को दिखाते हुए बोला– ''दीदी ये देखो, ऐसा होता है, निनोना।'' ''ये निनोना है!'' ''हाँ ये निनोना है दीदी।'' ''अरे बुद्धू ये निनोना नहीं नेनुआ है।'' अरुणा दीदी हँसते हुए बोली। ''हाँ दीदी नेनुआ। सही बोली आप। मम्मी भी यही कहती है। मैं भी यही कहना चाह रहा था पर याद नहीं आ रहा था।''

एक बार की बात तो अरुणा दीदी भूलती ही नहीं। विक्की छत पर बैठा पढ़ रहा था तभी रिक्की एक

प्लेट में बिस्कुट लेकर आया। एक बिस्कुट उसने लिया, दूसरा बिस्कुट विक्की को दिया, तीसरा पुनः खुद लिया और चौथा बिस्कुट पुनः विक्की को दिया। प्लेट में पाँचवाँ बिस्कुट भी था।

''इसे तोड़ो, आधा–आधा ले लिया जाय।'' विक्की ने कहा– ''हाँ तोड़ रहा हूँ।'' कहते हुए रिक्की ने बिस्कुट को आधा–आधा तोड़ा। टूटे हुए बिस्कुट में एक बिस्कुट छोटा हो गया, एक बड़ा। बड़ा वाला बिस्कुट रिक्की ने अपने लिए लिया और छोटा वाला विक्की को दिया।

''मैं छोटा वाला नहीं लूँगा, बड़ा वाला दो।'' विक्की बोला। ''नीचे से बिस्कुट मैं लाया हूँ इसलिए बड़ा वाला मैं लूँगा।'' ''ऐसी बात है तो सारे बिस्कुट प्लेट में तुम भी रखो मैं भी रखूं और प्लेट लेकर मैं नीचे जाता हूँ फिर मैं प्लेट लेकर आऊँगा और बड़ा वाला बिस्कुट मैं ले लूँगा।'' ''मैं नीचे से ऊपर लेकर आया हूँ, उसका क्या होगा ?''

''फिर कोई और आइडिया सोचो।'' छत के कोने में दो गिलहरियाँ घूम रही थी, वे खाने की चीज ढूँढ़ रही थी।

''वो देखो दो गिलहरियाँ कुछ खाने को ढूँढ़ रही है। ये आधा–आधा वाला बिस्कुट उनको ही दे देते हैं। बात खत्म।'' रिक्की–विक्की को गिलहरियों की तरफ देखा और दोनों टूटे हुए बिस्कुट गिलहरियों की तरफ फेंक दिये। बिस्कुट फेंकते ही पहले तो दोनों गिलहरियाँ भाग खड़ी हुई और कुछ देर बाद वापस आई। एक टुकड़ा एक गिलहरी ने उठाया और दूसरा टुकड़ा दूसरी गिलहरी उठाया और कुछ दूरी पर जाकर बिस्कुट को कुतर कर खाने लगी। इधर रिक्की–विक्की भी अपना बिस्कुट खाने लगे। अरुणा दीदी रिक्की–विक्की और गिलहरियों की हरकत देखकर फूले नहीं समा रही थी।

एक दिन छत पर बैठकर अरुणा दीदी पत्रिका पढ़ने में खोई थी, तभी रिक्की–विक्की दोनों भाइयों के झगड़ने की आवाज ने उसे उनकी तरफ आकर्षित किया। रिक्की– ''मेरी बॉल तुमने नीचे फेंक दी है। जाओ लाकर दो मुझे।'' ''तुमने मारा क्यों मुझे? अब मैं नहीं जाऊँगा बॉल लाने।'' विक्की बॉल लाने से इनकार करते हुए बोला।

''क्यों नहीं जाओगे। तुमने फेंकी है तो तुम्हीं जाओगे।'' ''मैंने बॉल फेंकी तो तुमने मुझे मार दिया। बात बराबर हो गई। अब मैं क्यों जाऊँ बॉल लाने। नहीं मारा होता तो जाता।'' तभी छत पर रिक्की–विक्की की मम्मी आ गईं। ''क्यों झगड़ रहे हो बेटा? गुस्सा थूक दो बात–बात पर झगड़ा नहीं करते हैं।'' मम्मी के गुस्सा थूकने की बात कहते ही विक्की ने 'थू' करके थूक दिया। ''जाओ जाकर मेरा बॉल नीचे से ला दो वरना मम्मी को बताऊँगा कि तुमने जान बूझकर मेरा बॉल नीचे फेंका है। फिर मम्मी भी तुम्हें मारेगी।'' रिक्की ने विक्की से बोला।

''अब क्यों झगड़ते हो गुस्सा तो हमने थूक दिया है।'' विक्की बोला। ''गुस्सा तुमने थूका है मैंने नहीं।'' ''गुस्सा थूक दिया तो क्या हुआ। तुम जान बूझकर बॉल फेंकने की बात बताओगे तो मैं भी मम्मी को बताऊँगा कि तुमने मुझे जोर से मारा है।''

''अब तुम कोई शिकायत नहीं कर सकते क्योंकि तुमने गुस्सा थूक दिया है। गुस्सा थूकने के बाद झगड़ा और शिकायत नहीं करते। चाहो तो ये बात मम्मी से पूछ सकते हो।'' छत के एक कोने में गेहूँ बनाती मम्मी की ओर इशारा करते हुए रिक्की बोला– ''ऐसी बात है तो मैं अपना थूका गुस्सा वापस ले लूँगा।''

''कैसे वापस ले सकते हो, वो तो सूख गया है। और नहीं भी सूखा होता तो क्या वापस लेने में तुम्हें घिन्न नहीं लगती।'' विक्की को उसके सूखे हुए थूक की ओर दिखाते हुए बोला।

विक्की सोचने लगा अब तो वो थूका हुआ गुस्सा वापस नहीं ले सकता और मम्मी से रिक्की के मारने की बात बताऊँगा तो रिक्की भी मेरे जान बूझकर बॉल फेंकने की बात बता देगा तो कहीं मम्मी मुझे ही न मारने लगे क्योंकि गलती तो पहले मैंने ही की है। ऐसा सोच कर विक्की बॉल लेने नीचे गया और फिर कब दोनों एक साथ खेलने लगे पता ही नहीं चला। अरुणा दीदी ने महसूस किया कि सचमुच दोनों ने गुस्सा थूक दिया है।

डॉ. संगीता बलवन्त
जमानियां गाजीपुर (उत्तर प्रदेश)

वर्ग पहेली

– राधा पालीवाल
कांकरोली (राजस्थान)

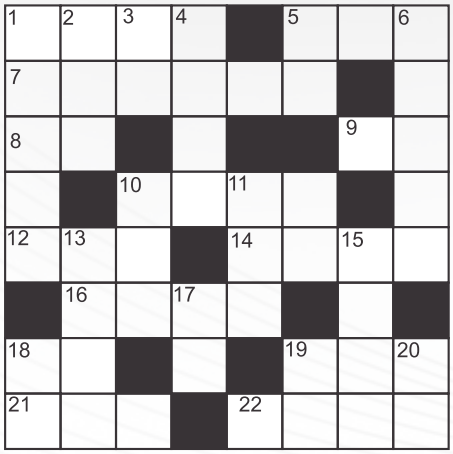

बाएँ से दाएँ

1. ईश्वर, प्रभु (4)
5. स्वर्ग का विलोम शब्द (3)
7. बिना किसी ठोस आधार के बनी धारणा, गलत अवधारणा (3.3)
8. शरीर, देह (1)
9. जो आपका है पर दूसरे ज्यादा काम लेते हैं (2)
10. उन्मत, बावला (4)
12. आक्रमण, धावा (3)
14. आकाश में विचरण करने वाला (4)
16. जमीन के नीचे बना कमरा या आवास (2.2)
18. एक ज्वलनशील गोंद जैसा द्रव्य, रेजिन (2)
19. वैद्य, जड़ी–बूटी से इलाज करने वाला (3)
21. सूचना, समाचार (3)
22. अटककर बोलना (4)

ऊपर से नीचे

1. एक सिक्ख क्रांतिकारी जो हँसते–हँसते फाँसी पर चढ़ गया। (3.2)
2. ठंडापन, अत्यन्त शीतलता (3)
3. हवा, एक प्रकार का रोग (2)
4. घृणा, नापसन्दगी (4)
5. गीलापन (2)
6. लेखक, लिखने वाला (3.2)
10. अफसोस, कुछ न कर पाने की पीड़ा (3)
11. बंदर, भगवान राम के साथी (3)
13. अर्थ, अभिप्राय (4)
15. चमक से युक्त, तड़क–भड़क वाला (4)
17. सघन, एक प्रसिद्ध पक्षी अभयारण्य (2)
18. जलने के बाद बचा हुआ धूसर पदार्थ (2)
19. अधिकार (2)
20. इनकार, निषेध (2)

उत्तर इसी अंक में

कवि रहीम कहते हैं...

कि यदि विपत्ति कुछ दिनों की हो तो वह भी ठीक ही है, क्योंकि विपत्ति में ही सबके विषय में जाना जा सकता है कि संसार में कौन हमारा हितैषी है और कौन नहीं।

रहिमन विपदा हूँ भली, जो थोरे दिन होय,
हित अनहित या जगत में, जान परत सब कोय।

हारिल पक्षी

हारिल पक्षी बड़ा निराला,
मिल जाता हर वन में।
वृक्षों पर ही बैठे हरदम,
पूरे निज जीवन में।

हल्का हरा रंग है इसका,
कबूतर जैसा रूप।
होता भोला–भाला पंछी,
सबको लगता अनूप।

महाराष्ट्र का राज्य विहग यह
हरियल भी कहलाता।
बरगद पीपल के वृक्षों पर,
अपना नीड़ बनाता।

बना बसेरा यह रहता है,
ऊँचे तरु के ऊपर।
एकमात्र पक्षी है हारिल,
पाँव न धरता भू पर।

अपने पंजों में क्यों रखता,
लकड़ी सदा दबाए।
सबको ही यह अचरज होता,
कोई समझ न पाए।

अनुशासन में रहकर हारिल,
दूर–दूर तक उड़ता।
सीटी जैसी मधुर आवाज,
से सबका मन हरता।

उदय मेघवाल 'उदय'
निम्बाहेड़ा (राजस्थान)

राखी बंधन

राखी बंधन पावन बंधन,
आओ इसे निभाएँ।
रक्षा के इन धागों में तो
सारे ही बँध जाएँ।

परम्पराओं का ये बंधन,
इसका भाव अनोखा है।
वचन निभाने का ये जग में,
सबसे सुन्दर मौका है।
आओ हुमायूँ, कर्णवती की
गाथा फिर दोहराएँ।...

जाति–पाँति से ऊपर है
यह ममता का त्यौहार।
रंग बिरंगे इन धागों में
भरा हुआ है प्यार।
इन धागों की पावनता में
हर मन को महकाएँ।...

सभी कलाई सजी हुई हैं,
रंग–बिरंगे धागों से।
जैसे फूल खिले हों घर–घर,
घर लगते हैं बागों से।
रेशम–रेशम हुईं कलाई,
झूम–झूम कर गाएँ।...

पंकज मिश्र 'अटल'
सरभोग, बरपेटा (आसाम)

आएँ बादल

वर्षा में जब आएँ बादल।
रिम–झिम बूँदें लाएँ बादल।।

बच्चों से मिलने को छत पर
कभी–कभी झुक जाएँ बादल।
कभी नहीं रहते हैं गुमसुम
बेहद शोर मचाएँ बादल।।

तान छेड़कर उमड़–घुमड़ की
सुन्दर मोर नचाएँ बादल।
खुद काले पर इन्द्रधनुष में
कितने रंग सजाएँ बादल।।

अम्बर–धरती गीला करके
अपना बदन सुखाएँ बादल।
लगते पर्वत जैसे, लेकिन
हवा चले उड़ जाएँ बादल।।

सूखी धरती को पल भर में
हरा–भरा कर जाएँ बादल।
औरों के हित जीना–मरना
हम सबको सिखलाएँ बादल।।

विज्ञान व्रत
नोएडा (उत्तर प्रदेश)

नाटिका

जागता गाँव

पात्र परिचय : बाजी राऊत (किशोर आयु का नाविक बालक), हरि राऊत (बाजी के पिता, अँग्रेजों के विरुद्ध आजादी की जंग लड़ने वाले संगठन 'प्रजामंडल' के सदस्य) सार्जेन्ट (पुलिस प्रमुख), अँग्रेज पुलिस 1–2, एवं गाँव वाले

स्थान : उड़ीसा प्रान्त के धनकेलाल जिले के नीलकंठपुर घाट का एक स्थान

काल : 10 अक्टूबर 1938 की एक शाम

प्रथम दृश्य

(पिता पुत्र घाट से लगी अपनी नाव पर बैठे हैं। वे गाँव वालों को नदी पार करवाते हैं और आने–जाने वालों पर निगरानी भी रखते हैं।)

हरि : जाओ बेटा, शाम होने को हैं घर जाकर भोजन कर आओ।

बाजी : पिताजी, पहले आप हो आइये। आपको तो फिर रात भर नाव पर ही रहना है।

हरि : अच्छा... अच्छा! ठीक है, जैसा तू कहे, पर मुझे तनिक प्रजामंडल के साथियों से भी मिलना है। तू नाव पर ही रहना।

बाजी : ठीक है पिताजी, आप बेफिकर रहिए।

(बाजी के पिता नाव से उतर कर गाँव की ओर चले जाते हैं। बाजी नाव पर बैठा जैसे अपने आपसे बातें कर रहा है।)

बाजी : सुबह जो लोग आए थे, वे बात कर रहे थे कि अँग्रेजों ने गांधी बाबा से घबराकर चारों तरफ धरपकड़ मचा रखी है। गाँव–गाँव, शहर–शहर पुलिस सूँघती फिर रही है देश के लिए लड़ने वालों को। भारत माता की जय तक कहना बहुत बड़ा अपराध माना जा रहा है वे इसे बगावत कहते हैं। (थोड़ी देर चुप रहता है फिर बड़बड़ाने लगता है।) ... लेकिन वे कह रहे थे भारत माता की जय तो होकर रहेगी, देश को आजादी मिलेगी ही।

कीमत चाहे जो चुकानी पड़े। ...सारा देश जाग रहा है। हम सब सैनिक हैं इस जंग के। (तभी एक ओर से दो तीन पुलिसवालों को आते देखता है)

बाजी : ऐ! ये पुलिसवाले तो इधर ही आ रहे हैं।

पुलिस–1 : ऐ छोकरे! ओ नाववाले! नदी पार करना है हमें। (बाजी मुँह फेर लेता है जैसे सुना ही न हो)

पुलिस–2 : क्यों रे सुना नहीं? जल्दी कर जल्दी। (बाजी कोई उत्तर नहीं देता)

पुलिस–1 : (उसका हाथ पकड़कर) बहरा है क्या? चल नाव खोल, हमें जल्दी है।

(बाजी हाथ छुड़ाकर नाव पर दूर खड़ा हो जाता है।)

बाजी : नहीं जाना है मुझे, मैं नहीं ले जाता।

पुलिस–2 : चलना तो तुम्हें पड़ेगा ही। यहाँ और कोई नाव भी नहीं है। सुना है उस पार गाँव में कुछ सत्याग्रही छुपे हैं। जल्दी कर कहीं भाग न जाएँ।

बाजी : इसीलिए तो नहीं जाना है। चाहे जो करो यह नाव नहीं जाएगी तुम्हें लेकर।

सार्जेन्ट : अरे! बड़ा ढीट छोरा है। नाव छीन लो इसकी।

पुलिस–1 : (नाव पर चढ़कर) ठहर, तू ऐसे नहीं मानेगा। (बन्दूक उठाकर उसके हत्थे से मारना चाहता है।)

बाजी : तो तू भी ऐसे नहीं मानेगा। ये ले।

(चप्पू उठाकर उसका वार बचा लेता है। नाव डोलती है। पुलिसवाला लड़खड़ा कर गिर जाता है। दूसरा आगे–आगे बढ़ता है।)

पुलिस–2 : अरे पुलिस पर हाथ उठाता है, इतनी हिम्मत, अब तो तू मरेगा ही।

(वह भी बन्दूक उठाकर बट से मारता है। पहला भी उठकर उसे मारने लगता है। वह एक–दो वार बचाता है फिर गिर जाता है। उसके सिर पर चोट लगी है, पुलिसवाले उसे जूतों से मारते हैं।)

बाजी : (जोर से) वन्दे... मातरम्! भारत माता की जय! महात्मा गांधी की जय।

(नारे सुनकर दो चार गाँव वाले उधर आ जाते हैं।)

गाँव वासी : भारत माता की जय, महात्मा गांधी की जय।

पुलिस–1 : अरे! ये तो और भी लोग आ रहे हैं, क्या करें?

सार्जेन्ट : करना क्या है बन्दूकें तान लो, न माने तो गोली चलाओ।

पुलिस–2 : रुक जाओ, नहीं तो गोली चला दी जाएगी, वहीं रुक जाओ सब।

गाँव वासी : (आगे बढ़ते हुए) जो करना है कर लो हम नहीं रुकेंगे। वन्दे... मातरम्।

(कुछ और गाँव वाले आ जाते हैं।)

सार्जेन्ट : अरे कितने लोग हैं। सारा गाँव आ रहा है क्या? चलाओ गोली।

(गोलियाँ चलती है पर भीड़ नहीं रुकती। लोग मरते हैं, घायल होते हैं पर बढ़ते जाते हैं।)

पुलिस–1 : (बाजी से) चल–चल ले चल हमें, नहीं तो मार डालेंगे ये।

बाजी : आह... तो मरे न... वन्दे... मातरम्।

(पुलिसवाले भीड़ से बचते हुए भाग जाते हैं। भीड़ उनके पीछे है। दो लोग बाजी को उठाते हैं।)

एक : अरे यह तो बेहोश है।

दो : लगता है बचेगा नहीं। भैया देखो न सिर कैसा फट गया है?

एक : हाँ भैया, यह खिलता फूल भी चढ़ गया आजादी की वेदी पर! पर कितने ही देशभक्तों को बचा लिया इसने।

दो : हाँ, जब कोई ऐसा वीर आवाज देता है तो गाँव जागता है, गाँव जागता है तो देश जाग जाता है और तब आजादी तो मिलकर रहती है।

एक : और वह फिर से खो न जाए इसलिए हर गाँव बना रहना चाहिए जागता गाँव।

(पर्दा गिरता है)

गोपाल माहेश्वरी
इन्दौर (मध्य प्रदेश)

आओ पढ़ें : नई किताबें

हर लेखक अपनी पुस्तक में कुछ नयी, अनूठी व उपयोगी सामग्री प्रस्तुत करना चाहता है। यह खूबी इस पुस्तक में है जिसके प्रारम्भ में हिन्दी वर्णमाला के अक्षरों के क्रम में चार पंक्तियों की छोटी कविता दी गई है। ये कविताएँ उसी अक्षर से प्रारम्भ होने वाले शब्द पर आधारित है और उस शब्द की वस्तु का रंगीन सुन्दर चित्र भी दिया गया है। यह पुस्तक हिन्दी वर्णमाला शिक्षण को रोचक बनाती है। पुस्तक के पिछले हिस्से में रंगीन चित्रों के साथ 37 बाल कविताएँ हैं जो बच्चों को पढ़ने के लिए आकर्षित करती है। सारी कविताएँ लयबद्ध एवं मनमोहक है।

पुस्तक का नाम : हम तो बच्चे हैं **लेखक :** कुमुद वर्मा
संस्करण : 2021 **पृष्ठ :** 107 **मूल्य :** 299 रुपये
प्रकाशक : True Dreamster

यह सुन्दर आकर्षक आवरण की बड़ी साइज में रंगीन चित्रों से सुसज्जित 23 कहानियों की पुस्तक है। प्रसिद्ध अनुभवी लेखक ने बच्चों की रुचि को समझते हुए आसपास की सामान्य घटनाओं को सरल भाषा शैली में प्रस्तुत किया है। इन कहानियों में विविधता, रोचकता के साथ नैतिक मूल्यों से भरा संदेश भी है। सभी कहानियों के मुख्य पात्र बालक–बालिकाएँ है जिससे पढ़ते समय बालक उस कहानी में स्वयं को खोजने लगता है और रुचिपूर्वक जिज्ञासा के साथ पढ़ने लगता है। शुद्ध व सुन्दर मुद्रण के साथ कहानियों का प्रारम्भ व अन्त कलात्मक है।

पुस्तक का नाम : सही फैसला
लेखक : दर्शन सिंह 'आशट' **संस्करण :** 2021
मूल्य : 180 रुपये **पृष्ठ :** 94
प्रकाशक : प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

यह एक पहेली कहानी है जिसे ध्यानपूर्वक पढ़कर आपको समानार्थी शब्द के कम से कम 10 जोड़े खोजने हैं।

मोहन और सोहन एक ही दर्जा के छात्र थे। जाहिर है उनकी किताबें भी एक जैसी ही थी। पुस्तकों में समानता होने तथा अध्यापक एक ही होने के बावजूद दोनों की सीखने की क्षमता में एकरूपता न थी। मोहन के मुकाबले सोहन पढ़ने में तेज था। जब छमाही इम्तहान हुए तो मोहन के अंक सोहन से कुछ कम आए। मोहन उदास हो गया। परीक्षा में उसे कम मार्क हासिल हुए थे।

सोहन ने समझाया। मित्र निराश मत हो। वार्षिक परीक्षा में अच्छे मार्क लाने के लिए कक्षा में पढ़ाई पर ध्यान दो। जो समझ में न आए शिक्षक से पूछो। परिश्रम का फल मीठा होता है। अभी वक्त है तुम्हें तैयारी के लिए समय मिल जाएगा। मोहन ने सोहन की राय मान ली और वह प्रतिदिन एक कलाक सुबह तथा एक कलाक शाम पढ़ने लगा। दो घंटे रोज की पढ़ाई रामबाण साबित हुई। अन्त में मेहनत रंग लाई और नतीजा आने पर मोहन और सोहन दोनों प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। मोहन ने अपने दोस्त सोहन को गले लगाकर धन्यवाद दिया और कहा तुम जैसा मित्र ईश्वर सबको दे।

वसीम अहमद नगरामी
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

उत्तर इसी अंक में

महान देशभक्त

चन्द्रशेखर

क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद एक ऐसे उत्साही देशभक्त थे जिनका नाम सुनकर ब्रिटिश सरकार थर थर काँपती थी। आज भी उनका जीवन प्रेरणादायक है। चन्द्रशेखर आजाद भारत के महान क्रांतिकारियों में से एक है। वह एक निर्भीक क्रांतिकारी थे जिन्होंने देश के लिए अपने प्राणों का बलिदान दे दिया। बेखौफ अन्दाज के लिए जाने जाने वाले चन्द्रशेखर सिर्फ 14 साल की उम्र में 1921 में गांधी जी के असहयोग आन्दोलन से जुड़ गए थे। गांधीजी द्वारा असहयोग आंदोलन को अचानक बन्द कर देने के कारण उनकी विचारधारा में बदलाव आया।

स्वतन्त्रता संग्राम के महान नायकों में से एक चन्द्रशेखर ने बचपन में ही निशानेबाजी सीख ली थी। आजादी का नारा लगाते हुए अपनी पहली सजा में आजाद को 15 कोड़े पड़े। आजाद की देशभक्ति का अन्दाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि हर कोड़े पर उन्होंने वंदे मातरम के साथ–साथ महात्मा गांधी की जय के नारे लगाए। इसके बाद से ही उन्हें सार्वजनिक रूप से 'आजाद' पुकारा जाने लगा।

उनकी पहली सजा मिलने का किस्सा भी दिलचस्प है। कोर्ट में जब उनसे उनके बारे में पूछा गया तो उन्होंने अपना नाम आजाद बताया। पिता का नाम स्वतन्त्रता और निवास स्थान के नाम पर जेल का नाम लिया। चौरा–चौरी घटना के बाद जब महात्मा गांधी ने अपना आन्दोलन वापस ले लिया तो आजाद समेत कई युवा क्रांतिकारी काँग्रेस से अलग हो गए और अपना संगठन हिन्दुस्तानी प्रजातान्त्रिक संघ बनाया। इस संगठन में देश के नवयुवक क्रांतिकारियों को जोड़ा गया।

आजाद ने उसके बाद अन्य क्रांतिकारियों को लेकर सरकारी खजानों को लूटना शुरू कर दिया। अँग्रेजों ने भारत की जनता पर अत्याचार कर उनसे जो धन लूटा था वह इन्हीं खजानों में रखा जाता था। रामप्रसाद बिस्मिल और चन्द्रशेखर आजाद ने साथी क्रांतिकारियों के साथ मिलकर ब्रिटिश खजाना लूटने और हथियार खरीदने के लिए ऐतिहासिक काकोरी ट्रेन डकैती को अंजाम दिया। इस घटना ने ब्रिटिश सरकार को हिलाकर रख दिया था। लाला लाजपत राय की मौत का बदला आजाद ने ही लिया था। आजाद ने लाहौर में अँग्रेजी पुलिस अधिकारी सॉन्डर्स को गोली से उड़ा दिया था। इस कांड से अंग्रेजी सरकार सकते में आ गई। आजाद यही नहीं रुके उन्होंने लाहौर की दीवारों पर खुलेआम परचे भी चिपकाए। परचों पर लिखा था कि लाला लाजपत राय की मृत्यु का बदला ले लिया गया है।

आजाद ने कहा था कि वह आजाद हैं और आजाद ही रहेंगे। वह कहते थे कि अँग्रेजी सरकार जिन्दा रहते उन्हें कभी पकड़ नहीं सकती और न ही गोली मार सकती है। 27 फरवरी 1931 को अँग्रेजी पुलिस ने इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में आजाद को चारों तरफ से घेर लिया। अँग्रेजों की कई टीमें पार्क में आ गई। आजाद ने 20 मिनट तक पुलिस से अकेले ही लोहा लिया। इस दौरान उन्होंने अपने साथियों को वहाँ से सुरक्षित बाहर भी निकाल दिया। जब उनके पास बस एक गोली बची तो उन्होंने उसे खुद को मार ली क्योंकि उन्होंने संकल्प लिया था कि उन्हें कभी भी अँग्रेजी पुलिस जिन्दा नहीं पकड़ सकती।

. जब आजाद ने खुद को गोली मारी तो भी अँग्रेजी पुलिस की उनके पास जाने की हिम्मत नहीं हुई। काफी देर बाद जब वहाँ से गोली नहीं चली तो अँग्रेज थोड़ा आगे बढ़े। उनकी नजर आजाद के मृत शरीर पर पड़ी तो उन्हें होश में होश आया। अपनी अन्तिम लड़ाई में आजाद ने अँग्रेजों की पूरी टीम के छक्के छुड़ा दिए थे। जिस पार्क में चन्द्रशेखर आजाद हमेशा के लिए आजाद हो गए आज उस पार्क को चन्द्रशेखर आजाद पार्क के नाम से जाना जाता है।

हरीशचंद्र पाडे
हल्द्वानी (उत्तराखंड)

मिल गया जादुई पिटारा

आज रविवार की छुट्टी थी। दक्षु अपनी दादी के साथ हँसते–मुस्कुराते पार्क में आई। वहाँ बहुत सारे बच्चे पहले से ही आये हुए थे। दक्षु सबको अपनी दादी से मिलवा रही थी। दक्षु अपनी दादी को अम्मा कहकर पुकारती है। अम्मा भी उन सबको टॉफी देते हुए उनके सिर पर हाथ फेरकर, आशीर्वाद दे रही थी। ''दक्षु! तुम्हारी अम्मा तो तुम्हें ढेर सारी कहानियाँ सुनाती है न।'' अनु ने पूछा। ''हाँ यार! मेरी अम्मा मुझे रोज रात को सोते समय बहुत प्यारी–प्यारी कहानियाँ सुनाती है।'' दक्षु आँखें मटकाते हुए बोली।

''तो प्लीज तुम अम्मा से बोलो न कि हमें भी आज कोई कहानी सुनाये।'' दिव्यांश ने दक्षु को मनुहार भरे शब्दों में कहा। उसकी इस बात को अम्मा ने सुन लिया, वह बोली– ''प्यारे बच्चो! तुम सबको कहानी सुनना पसन्द है, यह तो बहुत अच्छी बात है। आओ, हम सब उस बड़े पेड़ के नीचे बने चबूतरे पर बैठते हैं। मैं वहीं तुम्हें कहानी सुनाऊँगी।''

सभी बच्चे खुशी से झूम उठे और जाकर चबूतरे पर बैठ गए। अम्मा उन सबके बीच में बैठ गई। अम्मा ने अब बच्चों को कहानी सुनाई– ''मिल गया जादुई पिटारा''। उसमें एक जादूगर को जादुई पिटारा मिलते ही उसने उसका क्या–क्या उपयोग किया और उसके गलत प्रयोग करने पर उसको कितना भयानक नुकसान उठाना पड़ा? बच्चों ने कहानी को बड़े ध्यान से सुना। उन्हें खूब मजा आया। इतने में कुछ और महिलाएँ वहाँ आ गई। दादी उनसे बातें करने लगी। पर आज तो जैसे बगीचे की रंगत ही बदल गई। सब बच्चे खेलना भूलकर उस जादुई पिटारे के रंग में रंग गये और लगे डींगें हाँकने।

''सुनो! तुम सब'' दक्षु उत्साहित होती हुई बोली– 'एक बार मुझे भी जादुई पिटारा समुद्र में तैरते हुए मिला और देखते ही देखते अचानक से मेरे पंख लग गये। मैं उड़कर उसको उठाने लगी तो एकाएक वह खुल गया।''

''फिर उसमें क्या निकला!'' आयुषी आश्चर्य से बोली। ''वहीं तो बता रही हूँ। उसमें एक परी की सुन्दर सी ड्रेस निकली और खूब सारा मेकअप का सामान भी। मैंने समुद्र के अन्दर उतर कर वह ड्रेस पहनी और समुद्र के पानी पर खड़े–खड़े ही अपना मेकअप कर लिया। तैयार होते ही जैसे ही मैंने पिटारे में रखी जादुई छड़ी को छुआ तो मैं खुद ही परी बन गई। बहुत सुन्दर परी, आसमान की राजकुमारी।''

उसकी बात बीच में काटते हुए आयुषी बोली– ''वैसा जादुई पिटारा तो मुझे भी मिला था पर वह तो सड़क पर ही गिरा हुआ था। मैंने जैसे ही पिटारा खोला तो उसमें से एक जिन्न निकला उस विशाल जिन्न को देखकर, एक बार तो मैं बुरी तरह डर गई पर जब उसने हाथ जोड़कर गरदन झुकाए मुझ से पूछा– 'जो हुकुम मेरे आका!' तो मुझे याद आ गया कि यह जिन्न अपने मालिक का गुलाम होता है। फिर क्या था, अपने तो मजे ही मजे हो गये। जो चीज चाहिए तुरन्त जिन्न को आर्डर दे देती। मिनटों में सब हाजिर। फिर अचानक मेरी नजर तुम पर पड़ी तुम आसमान में उड़ रही थी तो मैंने उससे कहा– 'चलो जिन्न मुझे इससे भी ऊपर चाँद पर ले चलो।' यह क्या, पलक झपकते ही मैं तो चाँद पर पहुँच गई। वहाँ एक महल भी बना है। अब मैं गर्मियों की छुट्टियों में वही रहूँगी।''

''अरे, मुझे तो वह जादुई पिटारा अपने कमरे में ही मिल गया।'' अवि भला कहाँ पीछे रहने वाला था। मैं जब सोकर उठा, तब जादुई पिटारे को पकड़े एक रोबोट मेरे सिरहाने खड़ा था। मेरे उठते ही उसने कहा– 'गुडमार्निंग सर! केन आई हेल्प यू प्लीज।' मैंने बोला– यस डीयर! तुम एक काम करो। मेरी मम्मी के घर के सब काम जल्दी से निपटा दो ताकि वह फ्री होकर थोड़ा अपने लिए समय निकाल सके, थोड़ा व्यायाम और विश्राम कर सके...। और शाम को हम सबके साथ बैठकर बातचीत कर सके। वह बिलकुल भी थकेगी नहीं तो फिर वह गुस्सा भी नहीं करेगी।''

''अरे यार! तुम सबको अपनी–अपनी लगी है। मुझे भी तो जादुई पिटारा मिला पर पता है कहाँ? स्कूल के गेट पर।'' अवि बोला। ''फिर क्या हुआ?'' सृष्टि ने विस्मय से पूछा। ''फिर क्या! वह मुझे देखते ही उड़ता हुआ मेरे पास आया और बोला, अवि भैया! मैं आपकी क्या मदद करूँ? पता है अचानक क्या हुआ? मेरे कुछ कहने से पहले ही वह भड़ाक की आवाज के साथ खुल गया और उसमें से बहुत सुन्दर–सुन्दर खिलौने बिखर गए। मैं उनके साथ खेलता ही रह गया। मेरी सारे दिन खेलने की बुरी आदत ने सब कबाड़ा कर दिया। मैं उससे यह माँगने वाला था कि यार, हमारी पढ़ाई, लिखाई, ट्यूशन से छुट्टी करवा दो और इस परीक्षा के भूत को तुम हमेशा के लिए अपने इस पिटारे में बन्द कर समुद्र में बहा दो। पर मैं क्या करूँ? सारे समय खेलने की आदत ने सब गुड़ गोबर कर दिया।''

आज तो सभी बच्चों की कल्पनाओं को पंख लग गये थे। पूरे पार्क की रौनक आज चबूतरे पर सिमट गई थी। अँधेरा होने को आया देख दादी उनके पास आई और बोली– ''बेटा! अब बहुत देर हो गई। हम सब घर चलें।'' ''प्लीज अम्मा! थोड़ी देर और रुको न। आज तो हम सबको बहुत मजा आ रहा है।'' दक्षु ने यह कहते हुए सब दोस्तों की बातें बताई।

बच्चों के उत्साह को देखते हुए अम्मा ने कहा– ''चलो, तुम कल सब एक ड्राइंग बनाकर लाना उसका शीर्षक होगा 'मिल गया जादुई पिटारा' उसमें तुम सब अपने जादुई पिटारे का स्कैच बनाना... और हाँ, जिसकी पेंटिंग सबसे सुन्दर होगी। उसे पुरस्कार मिलेगा और बाकी सबको चाकलेट।'' इस बात पर सभी बच्चों ने जोरदार तालियाँ बजाकर अम्मा की बात का समर्थन किया। सबने खुशी–खुशी अम्मा को प्रणाम किया और घर लौट आये।

आज शाम की तरह अब सबकी रात भी जादुई पिटारे के इर्द–गिर्द ही घूमने लगी थी। कोई देर तक जाग कर ड्राइंग बना रहा तो कोई सुबह जल्दी उठकर अपने जादुई पिटारे में कल्पनाओं के रंग भर रहा था। आज तो उनकी इस लगन को देख उनके मम्मी–पापा भी आश्चर्यचकित थे। सबसे ज्यादा अचरज इस बात पर था कि जो बच्चे दस बार उठाने पर नहीं उठते, आज बिना उठाये घर में सबसे पहले जाग कर अपने काम में लगे हैं। मम्मी–पापा को जब अम्मा की प्रतियोगिता वाली बात पता चली तो वे भी लग गये उनकी मदद करने।

दूसरे दिन शाम को सब तय समय पर अम्मा के घर अपनी–अपनी ड्राइंग लेकर पहुँच गये। सबको देखकर अम्मा बहुत खुश हुई। दुलार करते हुए अपने हाथों से गरमा गरम पकौड़े बनाकर खिलाये। अब बारी आयी ड्राइंग के निर्णय की। अम्मा ने एक–एक कर सबकी ड्राइंग देखी। उनको बहुत मजा आ रहा था। बच्चों की कल्पना और उसमें भरे रंगों को देखकर। किसी–किसी ड्राइंग को देखकर तो सबके पेट में हँसते–हँसते बल ही पड़ रहे थे।

बूझो तो जानें

1

राम-राम मैं करता हूँ,
नहीं किसी से डरता हूँ।
लाल मेरी चोंच सुन्दर,
सबके मन को हरता हूँ।

5

घर में दबे पाँव वो आकर,
अपनी आँखों को चमका कर।
खा जाती है दूध मलाई,
थाली पंजे से सरका कर

2

कुहू-कुहू की बोलूँ बोली,
सूरत मेरी बिलकुल भोली।
पंखों को अपने फैला कर,
अमियाँ की बगिया में डोली।।

3

काँव-काँव मैं करता जाऊँ,
घर सबके महमान बुलाऊँ।
रह कर अपनी ही मस्ती में,
अपने मन का राग सुनाऊँ।।

4

रोज सवेरे मैं उठ जाऊँ,
उठते ही मैं बाँग लगाऊँ।
अपनी मीठी बाँग सुना के,
मैं नींद से तुम्हें जगाऊँ।।

अनीता गंगाधर शर्मा
अजमेर (राजस्थान)

उत्तर इसी अंक में

अचानक सृष्टि की ड्राइंग देख अम्मा की आँखें ठहर गई। ''वाह! कितनी सुन्दर ड्राइंग बनाई।'' उन्होंने सभी बच्चों को वह ड्राइंग दिखाई। सभी उसे बड़े ध्यान से देखने लगे। ''वाह सृष्टि! तुमने तो बहुत कमाल कर दिया।'' दक्षु बोली। ''यह देखिए अम्मा! इसके पिटारे में कितने सुन्दर–सुन्दर हरे भरे पेड़ दिख रहे है न।'' आयुषी बोली। ''अरे, सब इधर देखो, इसने पॉलिथिन के कचरे के साथ कैसे धरती माता को रोते हुए बताया है।' अवि बोला।

''इसके पिटारे से तो देखो, हरियाली के साथ सुन्दर नदी–तालाब, उड़ते पक्षी, उगता सूरज, खिलते फूल..।'' नन्नू बोल ही रही थी कि दिव्यांश बीच में ही बात काटते हुए बोला– ''अरे एक ही लाइन में कह दो न कि इसके जादुई पिटारे में से प्रदूषण मुक्त, हरी भरी धरती माता दिख रही है।''

''हाँ, हाँ, सही बात।'' सब एक साथ बोल पड़े। ''एकदम स्वच्छ, सुन्दर, खुशहाल, हरी भरी धरती माता।'' अम्मा ने सृष्टि को आँचल में भर लिया और उसकी अनूठी ड्राइंग को पहला स्थान दिया और उसे एक प्यारा सा पुरस्कार दिया। सब बच्चों ने जोरदार तालियाँ बजाई।

अम्मा ने सब बच्चों को चाकलेट्स देते हुए कहा– ''बच्चो! तुम सबने अपने ही लिए बहुत कुछ चीजें माँगी थी पर सृष्टि बिटिया का ध्यान अपनी धरती माता की परेशानी पर गया, यह सराहनीय बात है। हमें सबकी पीड़ा और दर्द का एहसास होना चाहिए।''

अगले रविवार को फिर अम्मा से पार्क में मिलने के वादे के साथ सब खुशी खुशी विदा हो गए।

विमला नागला
केकड़ी अजमेर (राजस्थान)

इंजीनियर : राष्ट्रीय वि

15 सितम्बर : अभियन्ता दिवस

प्रतिवर्ष भारत में 15 सितम्बर को अभियंता दिवस मनाया जाता है। क्या आप जानते हैं, यह दिवस क्यों मनाया जाता है?

भारतरत्न मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया महान इंजीनियरों में से एक थे। वे अत्यन्त प्रतिभाशाली और उत्कृष्ट कार्य कुशल व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने ही आजाद भारत को आधुनिक रूप देने की शुरुआत की। उन्होंने इंजीनियरिंग के क्षेत्र में असाधारण योगदान दिया था जिसे हम नहीं भुला सकते। देशभर में कई नदियों पर बाँध और पुलों को बनाने में विश्वेश्वरैया का बहुत बड़ा योगदान रहा। उन्होंने कई जलाशयों का निर्माण और बाढ़ से सुरक्षा प्रणाली तैयार की थी। उन्हीं के प्रयास से देश में पानी की समस्या भी दूर हुई थी। वर्ष 1968 में भारत सरकार ने इस महान इंजीनियर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया के जन्मदिन '15 सितम्बर' को 'अभियंता दिवस' (इंजीनियर्स डे) के रूप में मनाने की घोषणा की। तभी से प्रति वर्ष यह दिवस सम्पूर्ण भारत में मनाया जाता है।

विश्वेश्वरैया का जन्म मैसूर राज्य (अब कर्नाटक) के कोलार जिले में 15 सितम्बर 1860 को हुआ था। वर्ष 1955 में इन्हें भारत के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से अलंकृत किया गया था।

इंजीनियर कौन होता है?

इंजीनियरिंग जन सामान्य को लाभ पहुँचाने वाली वस्तुओं को बनाने में वैज्ञानिक और गणितीय सिद्धांतों, अनुभवों और सामान्य ज्ञान को लागू करने की एक विशिष्ट कला है और इसी कला के द्वारा पुलों, सड़कों भवनों का निर्माण, चिकित्सा उपकरणों व तकनीक का विकास, विभिन्न मशीनों, उत्पादों या प्रणालियों का आविष्कार करने की प्रक्रिया को इंजीनियरिंग कहते हैं। इस प्रक्रिया को जो प्रशिक्षित व्यक्ति अंजाम देता है, उसे इंजीनियर कहते हैं।

इंजीनियर हमारे राष्ट्रीय विकास के हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करके देश के लिए अत्यन्त योगदान देता है। भवन निर्माण, सड़क और पुल हो, रेलें, मशीनें, वायुयानों या जल पोतों का निर्माण हो, विद्युत उत्पादन या वितरण का क्षेत्र हो, शहर में जल वितरण व्यवस्था हो, चंद्रमा या मंगलग्रह पर जाने का यान हो, मिसाइल तोप या बंदूकों का निर्माण हो, गहरे समुद्र में पुल बाँधना, समुद्र में रेल मार्ग बनाना, पहाड़ों को काटकर सुरंग बनाना, पृथ्वी का सीना चीर कर कोयला, गैस और तेल का उत्पादन करना भी एक इंजीनियर का ही काम होता है।

गगनचुंबी इमारतें और सैकड़ों मीटर ऊँची मूर्तियाँ इंजीनियरों के सहयोग और इनके कला कौशल के बिना इनका निर्माण असम्भव है। मैटलिक इंजीनियर बताता है कि कौन सी धातु उपयुक्त है। सदियों तक इसका कुछ नहीं बिगड़ेगा। इस पर हवा और पानी का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। कितने ताप पर

कास का आधार स्तंभ

इसे पिघला कर ढाला जा सकता है। सैकड़ों मीटर ऊँचाई रखनी है तो आधार की माप और शिखर की माप कितनी होनी चाहिए, एक इंजीनियर ही तय करता है। भूकंपरोधी भवन बनाना है तो कैसा मैटीरियल लगाना होगा, एक इंजीनियर ही बताता है।

पूरे देश में गैस और तेल की पाइप लाइनें बिछी हुई हैं, जिससे यह दोनों उत्पाद देश के अधिकांश हिस्सों में पहुँचाए जाते हैं। एक इंजीनियर ही यह तय करता है कि पाइप लाइन में भेजे जाने वाले उत्पाद का कितना प्रेशर रखना है? वह जानता है अधिक प्रेशर होने पर लाइन फट सकती है। यदि मुंबई से दिल्ली तक तेल जा रहा है तो दिल्ली में प्रेशर सही मिले इसके लिए भी इंजीनियर जगह–जगह पर बुस्टर पंप लगाता है। अतः विभिन्न क्षेत्रों में कार्यों के अनुसार तरह–तरह के इंजीनियर उपलब्ध होते हैं। अतः इंजीनियरिंग का क्षेत्र विशाल है।

मुख्य रूप से इलेक्ट्रिकल, मैकेनिकल, केमिकल, सिविल, कंप्यूटर साइंस, आई.टी, एयरोस्पेस, ओशनिक, न्यूक्लियर, बायोमेडिकल एंड बायोकेमिकल तथा एनवायरमेंटल शाखाओं में इंजीनियरिंग की डिग्री दी जाती हैं।

एक सफल इंजीनियर के गुण

एक सफल इंजीनियर में निम्नलिखित गुण पाए जाते हैं– वह गणित और विज्ञान विषय के ज्ञान में पारंगत होता है। वह तथ्यों का विश्लेषण करने और निष्कर्ष निकालने में दक्ष होता है। उसमें जिज्ञासा, कल्पनाशीलता, रचनात्मकता, अच्छा संचार कौशल होना अपेक्षित है। उसमें काम करने के तरीकों में सुधार, शोध कार्य और निर्माण कार्य में रुचि होनी जरूरी है।

इंजीनियर कैसे बनें

इंजीनियर बनने के लिए सबसे जरूरी है कि आपने कक्षा 12 की पढ़ाई साइंस स्ट्रीम में की हो। इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश के लिए जेईई मेंस, जेईई एडवांस, गेट, बिट सेट, सी मेट, डब्ल्यूबीजी, यूजीसी जैसी प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करनी होती है। प्राप्त रैंक के आधार पर उन्हें कॉलेज में प्रवेश दिया जाता हैं। यदि आप कक्षा 10 पास हैं, तो 'डिप्लोमा इन इंजीनियरिंग' करने के बाद बीटेक में आवेदन कर सकते हैं। बीटेक स्नातक स्तर की डिग्री होती है। ज्ञान और कौशल का विस्तार करने के लिए 2 वर्ष की मास्टर डिग्री अर्थात् एम.टेक कर सकते हैं। अनुसंधान और शिक्षा में रुचि रखने वाले लोग पीएचडी भी करते हैं।

इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने के लिए भारत के बड़े–बड़े शहरों में सरकारी मान्यता प्राप्त और प्राइवेट संस्थान हैं जो जेईई मेंस और जेईई एडवांस के स्कोर के आधार पर दाखिला प्रदान करते हैं। इनके अतिरिक्त भारत में इंजीनियरिंग इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी अर्थात् आईआईटी टॉप कॉलेजों में गिने जाते हैं जो भारत के रुड़की, गुवाहटी, हैदराबाद, तिरुचिरापल्ली, इन्दौर, मद्रास, दिल्ली, कानपुर मुंबई और खड़कपुर में स्थित हैं।

इस प्रकार इंजीनियर राष्ट्रीय विकास में रीढ़ की हड्डी के समान महत्त्वपूर्ण है। अभियंता दिवस पर देश के विभिन्न महाविद्यालयों एवं कल कारखानों में व्याख्यान, संगोष्ठी, प्रदर्शनी, सेमीनार के रूप में यह दिवस मनाया जाता है।

संतोष कुमार सिंह
मथुरा (उत्तर प्रदेश)

इस मित्रता दिवस पर...

पत्र

प्यारे बच्चो,

आप सभी जानते हो कि अगस्त के महीने में बहुत सारे त्यौहार आते हैं, जैसे कि रक्षाबंधन एवं हमारा राष्ट्रीय त्यौहार स्वतन्त्रता दिवस मगर एक त्यौहार और भी है, जो मुख्य रूप से आप बच्चों में बहुत प्रचलित है और वह है मित्रता दिवस (friendship day) अगस्त माह का पहला रविवार प्रति वर्ष मित्रता दिवस के रूप में विश्व भर में मनाया जाता है।

आप सभी मित्रता दिवस जरूर मनाते होंगे। इस दिन आप अपने मित्रों के लिए फ्रेंडशिप बैंड बनाते हैं या खरीदते हैं। मित्रता दिवस को फ्रेंडशिप बैंड से जोड़ना एक सामान्य बात है और इसमें कुछ गलत भी नहीं है। आप सभी अपने मित्रों को फ्रेंडशिप बैंड जरूर देते होंगे, पर आज हम मित्रता दिवस के बारे में कुछ नया सीखेंगे और इसी के बारे में चर्चा करने वाले हैं।

सबसे पहले हम यह समझते हैं, कि मित्रता का अर्थ क्या है? मित्रता एक ऐसा रिश्ता है, जिसमें स्वार्थ नहीं होता और आवश्यकता पड़ने पर एक दूसरे की सहायता की जाती है। आपको याद होगा कि श्री कृष्ण और सुदामा की मित्रता बहुत प्रसिद्ध है। एक उदाहरण महाभारत से जुड़ा है, जहाँ पर कर्ण और दुर्योधन की मित्रता की मिसाल दी जाती है। इन उदाहरणों से आपको यह बताने का प्रयास किया जा रहा है कि मित्रता कितना पवित्र और घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। सच्चा मित्र वही है, जो कठिनाई में आपकी सहायता करें और समय–समय पर आपकी कमियों से भी अवगत कराएँ और जब–जब आपने कुछ अच्छा किया हो, तो आपकी खुशियों में भी शामिल हो।

बच्चो, हो सकता है जब आप अपने मित्रों के लिए फ्रेंडशिप बैंड बनाएँ तो आपको अच्छा लगे, पर आपको इससे भी ज्यादा अच्छा तब लगेगा जब आप अपने और अपने मित्र के बीच में मित्रता का बॉन्ड (Bond) बनाएँ। बॉन्ड शब्द सम्बन्धों की घनिष्ठता को दिखाने के लिए प्रयोग किया जाता है। बॉन्ड बनाने के लिए मित्रता दिवस वाले दिन, आप अपने मित्र को धन्यवाद कर सकते हैं और किसी घटना की चर्चा कर सकते हैं, जब आपके मित्र ने आपका साथ दिया हो और वो बातें आपके मन को छू गई हो। आप चाहे तो अपने मित्र के लिए, एक धन्यवाद पत्र भी लिख सकते हैं या फिर आप उसके लिए एक वीडियो बना सकते है, जिसमें आप अपने मित्र की खूबियाँ बता सकते हैं, या कुछ नटखट किस्से भी रिकॉर्ड कर सकते हैं। इन गतिविधियों का प्रयोग करके आप बहुत ही मजे से और संवेदनशील रूप में मित्रता दिवस मना सकते हैं। तब निश्चित रूप से आपको बहुत अच्छा लगेगा और आपकी मित्रता का बॉन्ड, बहुत ही मजबूत बन जाएगा।

मुझे आशा है आपको मेरी बात अच्छी लगी होगी। अन्त में बस इतना ही कहना चाहूँगी कि इस मित्रता दिवस पर बैंड नहीं बॉन्ड बनाएँ।

पत्र लेखन : नेहा गुप्ता, दिल्ली

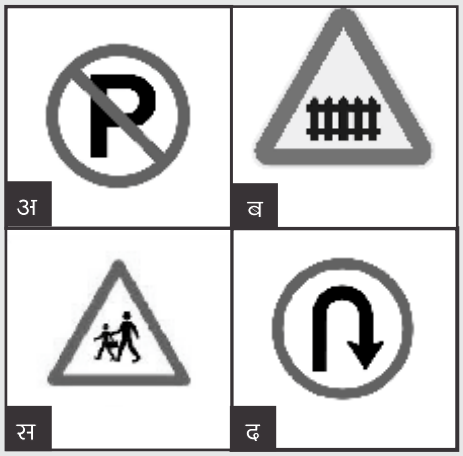

दस सवाल दस जवाब

(1) इन चित्रों के संकेत क्या प्रदर्शित करते हैं?
(2) ट्रेफिक सिग्नल की यलो लाइट से क्या मतलब है?
(3) जेबरा लाइन किसकी सुविधा के लिए बनाई जाती है ?
(4) भारत में सड़क के किस ओर चलना सही माना जाता है?
(5) किन क्षेत्रों में ड्राइवर को हॉर्न नहीं बजाना चाहिये?
(6) भारत में सड़क सुरक्षा सप्ताह कब मनाया जाता है?
(7) रोड़ पर वाहन को ऑवरटेक किस ओर से करना चाहिये?
(8) सड़क दुर्घटना होने पर किस नम्बर पर कॉल करना चाहिये?
(9) NHAI का पूरा नाम क्या है?
(10) दो पहिया वाहन चलाते समय हेलमेट लगाने से क्या लाभ है ?

उत्तर इसी अंक में

- टीचर : 1869 में क्या हुआ?
  सुरेश : गांधीजी का जन्म।
  टीचर : बिलकुल सही। बैठो नीचे...।
  टीचर : पप्पू तू बोल, 1872 में क्या हुआ?
  पप्पू : गांधीजी तीन साल के हो गए। मैं भी बैठ जाऊँ ?

- टीचर : पाँच में से पाँच घटाने पर कितने बचेंगे?
  गोलू : पता नहीं टीचर।
  टीचर : अगर आपके पास 5 भटुरे हैं और मैं 5 भटुरे आपसे ले लूँ तो आपके पास क्या बचेगा?
  गोलू : छोले

प्रिशा चौखाड़ा, कक्षा आठ, ठाणे महाराष्ट्र

विशेष – बाल पाठक भी चुटकले भेज सकते हैं।

प्रेरक वचन

हम सोचते बहुत है और महसूस बहुत कम करते है।

❖

हँसी टॉनिक है, राहत है, दर्द का निवारण करने वाली है।

❖

चतुराई से अधिक हमें दयालुता और विनम्रता की जरूरत है।

❖

मेरे सबसे खुशी के दिन वो होते हैं जिनमें मैं अच्छा काम करता हूँ।

❖

जीवन अद्‌भुत हो सकता है यदि लोग आपको अकेला छोड़ दें।

चार्ली चेप्लिन, हास्य अभिनेता

गिल्लू जी

गिल्लू जी तुम सुबह सबेरे
क्यों इतना उधम मचाती हो।
दीवारों पर कूद फांद कर
ऊँचाई पर चढ़ जाती हो।।

छत पर माना राज तुम्हारा
पर बन्दर से क्यों डरती हो?
दूर-दूर मुझ से भी बातें
टिर टिर टिर करती रहती हो।

लेकिन मन ही मन शायद तुम
अब भी मुझसे यह कहती हो,
पेड़ों से हम करें मित्रता
इस बात का दम भरती हो।।

निशेश जार
मथुरा (उत्तर प्रदेश)

दोनों चित्रों में आठ अन्तर दूँढ़िए

उत्तर इसी अंक में

इन्द्र की सलाह

आषाढ़ का महीना बीत चुका था और सावन भी बीता जा रहा था, लेकिन आकाश एकदम साफ था। दूर–दूर तक बादलों का नामोनिशान तक नहीं दिखाई दे रहा था। रामनगर में उदासी की चादर फैली हुई थी। राजा शुद्धोधन और उसका दरबार चिन्ताओं के सागर में डूबा हुआ था। दरबार में गहरा सन्नाटा पसरा हुआ था।

अचानक महामन्त्री बोले– ''राजन, यदि ऐसा ही चलता रहा तो निश्चित ही राज्य में अकाल पड़ जाएगा।'' यह सुनते ही वित्त मन्त्री जी बोले– ''हे राजन! यदि अकाल पड़ता है तो उस स्थिति में हम कहीं के नहीं रहेंगे। हमारा खजाना और अन्न भंडार तो पहले ही खत्म होने की कगार पर है।'' वित्त मन्त्री की यह बात सुनकर महाराज शुद्धोधन के माथे पर चिन्ता की लकीरें और गहरी होती चली गई।

अचानक राजपुरोहित बोला– ''राजन, लगता है हमारी किसी भूल के कारण हमसे इन्द्रदेव क्रोधित है, इसीलिए तो राज्य में वर्षा नहीं हो रही।'' राजपुरोहित का तर्क सुनकर राजा बोले– ''राजपुरोहित जी, यदि ऐसा है तो आप ही इसका कोई उपाय ढूँढ़कर बताओ।'' राजपुरोहित कुछ सोचते हुए बोले– ''राजन, इसका तो केवल एक ही उपाय है कि हमें इन्द्रदेव को प्रसन्न करने के लिए एक विशाल यज्ञ करना होगा।'' राजा बोले– ''जब आपके पास उपाय है तो देर किस बात की। इन्द्रदेव को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ की तैयारी की जाए।'' समस्या का समाधान पाकर राजा ने यज्ञ करने का तुरन्त ही आदेश देते हुए कहा कि– ''पूरे नगर में मुनादी (सूचना) करवा दी जाए कि कल राजभवन की यज्ञशाला में एक विशाल यज्ञ होने जा रहा है। सभी नगरवासी यज्ञ में शामिल हो।''

अगले दिन सभी नगरवासी अपने–अपने घरों से घी और धन लेकर के राजभवन की यज्ञशाला में एकत्रित हो गए। राजपुरोहित ने यज्ञ शुरू किया, मन्त्रोच्चारण होने लगे। दोपहर बाद अचानक यज्ञ अग्नि से इन्द्रदेव प्रकट हुए और बोले– ''राजन, मैं तुम्हारे यज्ञ से प्रसन्न हुआ। माँगो, वरदान माँगों।'' इन्द्र भगवान को अपने सामने पाकर राजा की खुशी का ठिकाना नहीं रहा और राजा इन्द्रदेव को एकटक देखते रहे। इन्द्रदेव बोले– ''राजन, क्या सोच रहे हो? वरदान माँगो, वरदान।'' इन्द्रदेव की आवाज सुनकर राजा की तंद्रा भंग हुई और दुःखी स्वर में बोले– ''हे भगवान! मेरे राज्य में कई महीनों से वर्षा नहीं हुई है, जिसके कारण राज्य में भयंकर अकाल की स्थिति बन गई। मेरी प्रजा दुःखी है। हे देव, आप मेरे राज्य में वर्षा करवा दो।'' ''तथास्तु'' – कहकर के इन्द्रदेव अंतर्ध्यान हो गए।

थोड़ी देर पश्चात ही आकाश बादलों से घिर गया, बादलों ने सूरज को ढक लिया व अँधेरा सा छाने लगा। बादल धरती को चूम–चूम कर जाने लगे। बादलों को देखकर लोग खुशी से पागल हुए जा रहे थे, लेकिन यह क्या? धीरे–धीरे अँधेरा घटने लगा और

देखते ही देखते सारे बादल बिना बरसे ही न जाने कहाँ गायब हो गए। आसमान एकदम साफ हो गया और सूरज फिर से चमकने लगा। नगरवासी त्राहिमाम् त्राहिमाम् करने लगे। यह देखकर के राजा शुद्धोधन ने पुनः यज्ञ आरम्भ करने का आदेश दिया।

यज्ञ फिर शुरू हुआ, फिर से मन्त्रोच्चारण दुगुने जोश से किया जाने लगा। इन्द्रदेव पुनः प्रकट हुए और बोले– ''राजन, अब क्या चाहिए?'' राजा ने इन्द्र देव को सारी बातें बताते हुए कहा– ''हे इन्द्रदेव! आपके बादल आए जरूर लेकिन बिना वर्षा किये ही वापस लौट गए।'' इन्द्र बोला– ''हाँ राजन, मुझे बादलों ने बताया था कि वो आपके राज्य में आये तो थे, मगर वर्षा नहीं कर पाए।''

राजा बोला– ''महाराज, आपके कहने के बाद भी उन्होंने मेरे राज्य में वर्षा क्यों नहीं की?'' यह सुनकर इन्द्रदेव ने कहा कि– ''आपके राज्य में तो पेड़ नाम मात्र ही है, जबकि बादलों को पेड़ बड़े प्यारे होते है, जहाँ अधिक पेड़ होते हैं, वहाँ अधिक वर्षा करते हैं और जहाँ पेड़ नाम मात्र या नहीं होते वहाँ वर्षा भी नाममात्र या बिलकुल नहीं करते। अतः बादलों को वर्षा करने के लिए पेड़ ही मजबूर करते हैं। मेरे आदेश पर बादल आपके राज्य में तो आए लेकिन पेड़ न होने के कारण वह आपके राज्य में चाहकर भी नहीं बरस पाए और वापस लौट गए।''

यह सुनकर राजा मायूसी से बोला– ''हे भगवान! अब हमें क्या करना चाहिए?'' इन्द्रदेव ने सलाह दी कि– ''राजन आपको अपने राज्य में अधिक से अधिक पेड़ लगवाने चाहिए, ताकि आपके राज्य में कभी भी वर्षा की कमी न हो।'' राजा बोला– ''हे इन्द्रदेव! मैं आपको वचन देता हूँ कि अपने राज्य में मैं स्वयं भी पेड़ लगाऊँगा और अपनी प्रजा को पेड़ लगाने के लिए प्रेरित करूँगा।''

राजा के इतना कहते ही इन्द्रदेव वहाँ से अंतर्ध्यान हो गए और इन्द्रदेव के जाने के थोड़ी देर बाद ही आकाश पुनः बादलों से घिर गया। बिजलियाँ कड़कने लगी। बादलों ने जोर की गड़गड़ाहट के साथ मूसलाधार बारिश की। नगरवासी खुशी से बारिश में नहाने लगे। राजा ने महामन्त्री से कहा– ''पौधे मँगवाए जाएँ। हम इस पावन वर्षा में खुद पौधा लगा करके अपने राज्य में पेड़ लगाओ अभियान की शुरुआत करेंगे।''

भूपसिंह भारती
नारनौल (हरियाणा)

सुडोकू

यह अंकों का जापानी खेल है, इससे बुद्धि का विकास होता है।

सुडोकू खेलना बहुत आसान है। खाली स्थानों को इस प्रकार भरें कि ऊपर से नीचे और बाएँ से दाएँ प्रत्येक पंक्ति एवं प्रत्येक नौ-नौ खानों के वर्ग में 1 से 9 तक अंक केवल एक बार आएँ।

6		9	3				1	
5		7			1	8		
		2			4			
		5	1				8	9
	8			2			7	
3	7				9	5		
			6			7		
		4	9			3		2
	5				3	1		6

उत्तर इसी अंक में

सत्यकथा

अदम्य साहस की

प्रतापचन्द को मिला अशोक चक्र

रेल चालक प्रतापचन्द, निवासी बाड़मेर के वक्ष पर राष्ट्रपति सर्वपल्ली डा. राधाकृष्णन ने अपने कर कमलों से अशोक चक्र पदक लगाया तो राष्ट्रपति भवन का केंद्रीय कक्ष तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। वहाँ उपस्थित जन समुदाय का माथा गर्व से ऊँचा हो गया। किसी रेल कर्मचारी को अशोक चक्र मिलना रेलवे के इतिहास की अद्वितीय घटना है।

प्रतापचन्द आगे चलकर रेलवे की ऑपरेटिंग शाखा में चालक के पद पर आसीन हुए। युद्ध काल में सेना को रसद पहुँचाने या उनकी सहायता करने के लिए रेल कर्मचारियों को प्रादेशिक सेना द्वारा विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रतापचन्द ने प्रादेशिक सेना का प्रशिक्षण लिया और सन 1965 के भारत पाक युद्ध में प्रादेशिक सेना की ओर से युद्ध में भाग लिया।

यह घटना 9 सितंबर 1965 की है। भारत–पाक युद्ध के दौरान बाड़मेर रेलवे स्टेशन को सूचना मिली कि सेना के लिए रसद पहुँचानी है। सामग्री ट्रेन से गडरा रोड जायगी। इस कार्य के लिए साहसी रेल चालक की आवश्यकता थी। कार्य मुश्किल था। परन्तु युद्ध के कारण आवश्यक था। इस कार्य के लिए रेल चालक टोकन नंबर 1416 प्रतापचन्द आगे आए और बोले– ''ट्रेन चलाकर मैं ले जाऊँगा। देश सेवा का इससे अच्छा अवसर मुझे नहीं मिल पाएगा।'' इसके बाद अधिकारियों ने प्रताप चंद को ट्रेन ले जाने की अनुमति दे दी।

ट्रेन को रात में ही रवाना करना था। जिससे प्रातःकाल ही सैनिकों को खाने पीने की सभी सामग्री मिल सके। वह रसद सामग्री से भरी गाड़ी लेकर आगे बढ़े। उन दिनों भाप से चलने वाले इंजन हुआ करते थे। इंजन में भाप बनाने के लिए कोयला झोंकना, साथ–साथ दुश्मन की गोलाबारी का भी ध्यान रखना काफी कठिन होता है। परन्तु अदम्य साहस का परिचय देते हुए उन्होंने अपना कार्य जारी रखा। आगे चलकर पता चला कि पाकिस्तानियों ने रेल की पटरी को क्षतिग्रस्त कर दिया है। रेलगाड़ी सुरक्षित पहुँचाने के लिए समस्या पैदा हो गई।

उन्होंने निर्णय लिया और खाली डिब्बे बाड़मेर स्टेशन के पास छोड़ दिए। रसद भरे हुए कोचों को सुरक्षित पहुँचाने के लिए चल पड़े। भारत–पाकिस्तान दोनों ओर से एक दूसरे पर गोलीबारी कर रहे थे। वह स्वयं को बचाते हुए ट्रेन चला रहे थे। फिर भी एक गोली प्रतापचन्द को लगी। वह लहूलुहान हो गए। इस स्थिति में कोयला झोंकने में कठिनाई होने लगी। प्रतापचन्द ने साहस से काम लिया और ट्रेन की गति कम नहीं की। इस समय ट्रेन पर प्रादेशिक सेना के साथी और भी थे, जिन्होंने ट्रेन को भारत–पाक सीमा तक पहुँचाने में अपना बलिदान दिया।

रेल चालक प्रतापचन्द ने जान की परवाह न करते हुए फौज को खाने–पीने की सामग्री पहुँचाकर ही दम लिया। उस समय हवाई जहाजों द्वारा की जा रही बमबारी के बीच ट्रेन को संचालित करना किसी फिल्मी दृश्य से कम नहीं था। कर्त्तव्य पालन की भावना से ओत प्रोत प्रतापचन्द घायल होने पर भी ट्रेन ले जाकर मुनाबाव पहुँचे। वहाँ जाकर रसद सामग्री सीमा पर तैनात सैनिकों को सुपुर्द की।

इस घटना ने रेलवे को गौरव दिलाया। इसलिए यह दिन रेलवे द्वारा हर वर्ष 9 सितंबर को शहीद दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन 17 कर्मचारियों ने अपना बलिदान दिया था। इसलिए भारतीय रेलवे उनकी स्मृति में कार्यक्रम आयोजित उनके बलिदान को याद करती है।

देखें पृष्ठ 37...

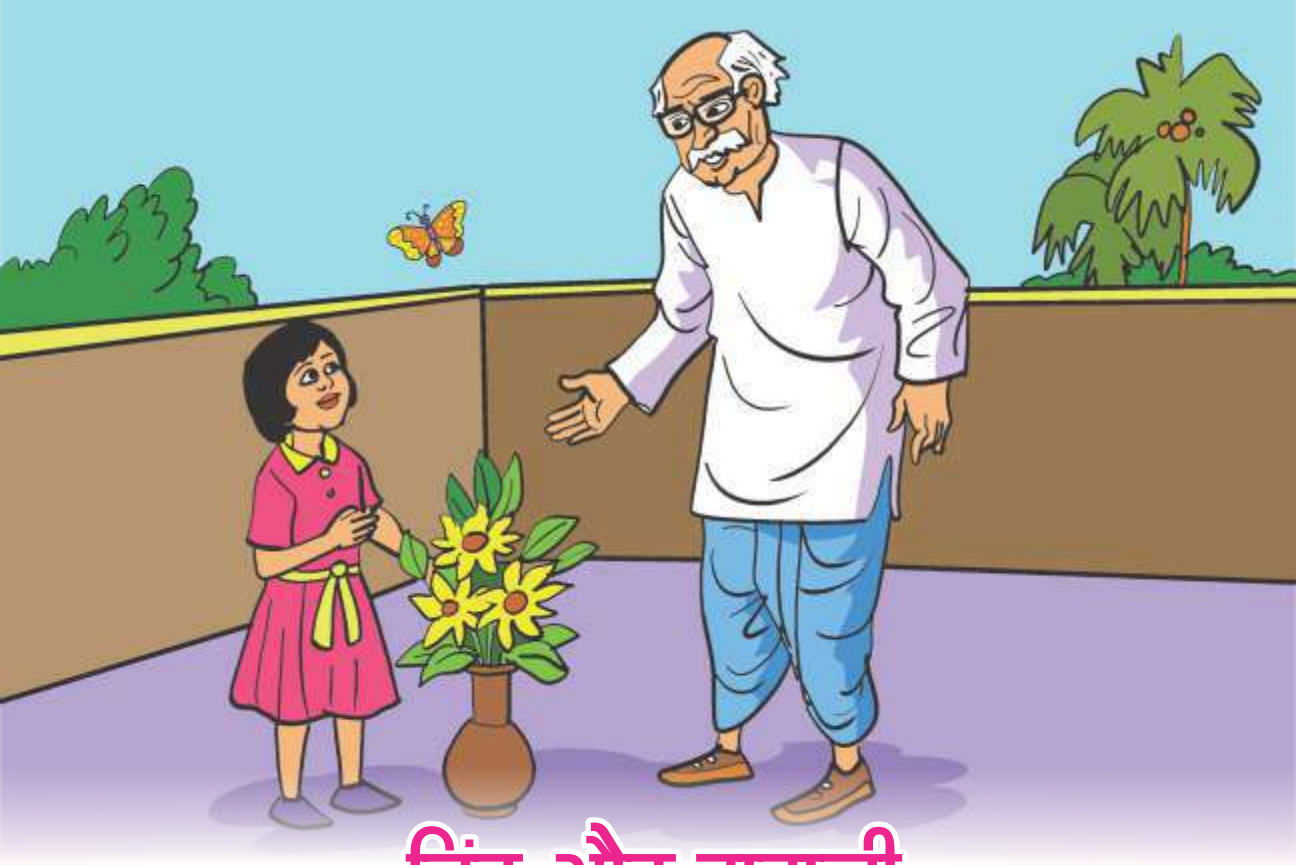

चिंटू और दादाजी

कोरोना की तीसरी लहर आते ही बेचारे चिंटू के स्कूल में फिर छुट्टी हो गई। मम्मी–पापा तो ऑफिस चले जाते और चिंटू अपने दादा जी के साथ घर में ही रहता पूरे दिन। दो–चार दिन तो ठीक लगा पर फिर दोनों ही एक–दूसरे को बोर करने लगे। छोटे से फ्लैट में चिंटू दिन भर अपनी कार दौड़ाता या छोटे से बैट से क्रिकेट खेलता। दादाजी को उसकी ये धमाचौकड़ी पसन्द नहीं थी, वे उसे चुपचाप बैठकर किताब पढ़ने को बोलते पर चिंटू कहानी सुनाने की जिद करने लगता। उसकी शर्त होती, या तो अपना मोबाइल दो खेलने या कोई नई कहानी सुनाओ।

उसके दादाजी ने कहा– ''तू कितना जिद्दी और शैतान है। मेरी नाक में दम कर दिया तूने, तेरा पापा तो तेरी उम्र में कितना समझदार था। मेरी मदद भी करता था और बाहर बगीचे में खेलता रहता था।''

''सच में दादू, क्या आप मेरे पापा को बचपन से ही जानते थे ?'' ''अरे बुद्धू! मेरा बेटा है वो, कैसे नहीं जानूँगा उसको बचपन से। बस, आज की कहानी पापा के बचपन की... ।''

''ठीक है, आज तेरे पापा की ही कहानी सुनाता हूँ। सुन, तेरा पापा जब छोटा था, हम उसे बिट्टू बुलाते थे। बिट्टू दिन भर बगीचे में तितलियों के पीछे भागता, उनको पकड़ने की कोशिश करता, आम के पेड़ पर जब कोयल कुहू–कुहू करती तो वह भी उसके साथ साथ कुहू–कुहू करता, पेड़ पर चढ़ने की कोशिश करता या टहनी पकड़ कर झूला झूलता, फूलों पर मधुमक्खियाँ मँडराती तो वह एक खाली माचिस की डिब्बी में एकाध मधुमक्खी बन्द कर देता! और फिर कान में उसकी गुनगुन सुनता।

मैं आँगन झाड़ता तो वह भी एक छोटी झाड़ू लेकर सफाई करता, मैं गमलों में पौधे लगाता तो वह भी अपने पौधे अलग से उगाता। जिस तरह तू सुबह उठते ही मेरे मोबाइल से खेलने की जिद करता है, वह उसी तरह सुबह उठकर बगीचे में पौधे देखने की

देखें पृष्ठ 36...

अच्ची देशभक्ति

एक छोटे से शहर में चीनू नाम का लड़का रहता था। चीनू बहुत ही शरारती बच्चा था,एक जगह पर शान्ति से बैठना जैसे उसे आता ही नहीं था। उसकी इस हरकत से घर,स्कूल और मुहल्ले के लोग भी परेशान रहते थे। कुत्ते की पूँछ मरोड़ देना, गाय को पत्थर मार देना उसके लिए खेल की तरह थे। स्कूल और घर में भी वह अकसर पानी का नल खुला छोड़ देता। कॉपी को फाड़कर हवाई जहाज बनाकर उड़ा देना, उसका पसन्दीदा शौक था।

हर दिन कोई न कोई उसकी शिकायत लेकर घर आता ही रहता था। चीनू की माँ ने उसे हर तरह से समझाने की कोशिश की पर चीनू हर बार माँ से वायदा करता कि आगे से वह ऐसी कोई भी शैतानी नहीं करेगा पर चीनू तो चीनू ही था। आज सुबह से माँ चौके में लगी थी –''अरे वाह माँ! ढोकला बना रही हो। कितना प्यारा रंग है! आज कुछ है क्या ?''

प्लेट में तीन रंग के ढोकले रखे थे केसरिया, सफेद और हरा। माँ ने चीनू की तरफ प्यार से देखा– ''चीनू! इस ढोकले को देखकर तुमको किसकी याद आती है, जल्दी से बताओ।'' चीनू सोचने लगा, ये रंग कहीं तो देखा है। वह खुशी से उछल पड़ा– ''माँ! ये तो हमारे देश के झंडे का रंग है। यह तिरंगा हमारे स्कूल की छत पर लगा रहता है।''

''बहुत बढ़िया।'' माँ ने चीनू के गाल को प्यार से थपथपाया और ढोकले का एक टुकड़ा उसके मुँह में डाल दिया। ''आज 15 अगस्त है यानी स्वतन्त्रता दिवस। आज के दिन हमारे देश को आजादी मिली थी, इसी खुशी में चीनू के पसन्द के ढोकले बने हैं। जानते हो चीनू यह हमारा राष्ट्रीय त्यौहार भी है।'' चीनू आश्चर्य से माँ की बातें सुन रहा था– ''चीनू! जरा टी. वी. तो चालू करो, आज परेड आ रही होगी।''

चीनू ने जल्दी से टी.वी. चालू किया, एक जैसी यूनिफॉर्म में सैनिक कदमताल करते हुए तिरंगे को सलामी दे रहे थे। प्रधानमन्त्री ने लाल किले की प्राचीर से देश को सम्बोधित किया, तभी आसमान से हेलीकॉप्टर से जनता पर फूलों की वर्षा की गई। हवाई जहाज तीन रंग का धुआँ (केसरिया, सफेद और हरा) उड़ाते हुए आसमान में गुम हो गए। ये सब बहुत ही रोमांचकारी था ।

''माँ–माँ! वो आगे वाले सैनिक को देखो, उसके सीने पर कितने सारे मेडल है।''

''चीनू! जिस तरह से तुम अपने स्कूल में जब कोई अच्छा काम

करते हो तो तुम्हें सर्टिफिकेट और अवार्ड दिया जाता है न... ठीक इसी तरह से इनको भी उनकी वीरता और देश की रक्षा करने के लिए सम्मानित किया जाता है। आज इन्हीं लोगों की वजह से हम सुरक्षित है और अपने घरों में चैन से सो पाते।'' माँ की बात सुनकर चीनू उत्साह से भर गया।

''माँ! मैं भी बड़ा होकर सेना में भरती होऊँगा और देश की सेवा करूँगा। चीनू एक सिपाही की तरह माँ की आँखों के सामने खड़ा हो गया, अपने नन्हे से चीनू के मुँह से ये बात सुनकर माँ मुस्कुरा पड़ी।

''बेटा! सरहद पर जाकर युद्ध लड़ना ही देश सेवा नहीं है, ऐसे बहुत से काम है जो हम खुद करके या दूसरों को प्रेरित करके भी करें तो वह भी सच्ची देशभक्ति है।'' चीनू आश्चर्य से माँ को देख रहा था, उसकी छोटी–छोटी आँखों में ढेरों सवाल तैर रहे थे। ''वह कैसे माँ? मुझे भी अपने देश की सेवा करनी है। मैं भी सच्चा देशभक्त बनना चाहता हूँ।''

माँ ने चीनू को अपनी गोदी में बिठा लिया और बड़े प्यार से उसके सिर पर हाथ फेर कर कहा– ''चीनू! जरूरी नहीं कि हर कोई सिपाही बनकर हाथ में बन्दूक लेकर दुश्मनों से लड़े। हम लोगों को गरीबों की सेवा के लिए प्रेरित कर सकते हैं। अपने घरों के कूड़े को इधर–उधर न फेंक कर उन्हें निश्चित जगह पर रखे कूड़ेदान में डाल कर भी अपना कर्त्तव्य निभा सकते हैं।

माँ ने आगे कहा–''ब्रश करते, नहाते, बर्तन धोते वक्त अनावश्यक जल को बरबाद होने से रोकना भी देश सेवा है। लोगों को प्लास्टिक के थैलो को छोड़कर जूट, कपड़े और कागज के बने थैलों का प्रयोग करने के लिए जागरूक करना और वातावरण को बचाने के लिए लोगों को पेड़ लगाने के लिए प्रोत्साहित करना भी देश सेवा है।'' ''माँ! ये सब तो बहुत आसान है, मैं ये सब कर सकता हूँ।'' चीनू खुशी से झूम उठा। सच्ची देशभक्ति क्या होती है, वह आज अच्छी तरह समझ गया था।

डॉ. रंजना जायसवाल
मीरजापुर (उत्तर प्रदेश)

'चिंटू और दादाजी' पृष्ठ 34 का शेष...

जिद करता था।'' चिंटू बहुत रोमांचित होकर पापा की कहानी सुनता रहा, फिर उदास होकर अपने दादा जी से बोला– ''दादू मेरे पापा तो मुझे कभी आम के बाग में भी नहीं लेकर गए, कभी गमले में पौधे भी नहीं उगाए और तितली तो मैंने आज तक देखी ही नहीं।''

''चलो दादू, हम तितली पाल लेते हैं खूब मजा आयेगा।'' ''अरे बुद्धू! तितली को कौन पालता है? जहाँ फूल होते हैं वहाँ तितली अपने आप आ जाती हैं।'' ''तो चलो, फूल उगाते हैं, फूल तो उगा सकते हैं ना दादू ?''

''जरूर उगा सकते हैं! पर तुम्हें मेरी मदद करनी पड़ेगी। करूँगा, जरूर करूँगा।'' फिर क्या था चिंटू और दादा जी दोनों को जोश आ गया, घर की एक बालकनी जिसमें पुराना सामान था उसे हटा कर साफ किया गया, नर्सरी जाकर छोटे, बड़े गमले लेकर आए, पौधे आ गए। छोटे गमले चिंटू के, बड़े दादाजी के। इतना ही नहीं फूलों के नाम भी पता किए। दो दिन की मेहनत में ही छोटा बगीचा बालकनी में ही तैयार हो गया! चिंटू का उस दिन खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा, जब उसने अपने छोटे से बगीचे में एक तितली को देखा।

नीमा पाठक
अजमेर (राजस्थान)

'सत्यकथा अदम्य साहस की ' पृष्ठ 33 का शेष...

भारत सरकार ने प्रतापचन्द को राष्ट्रपति भवन में आयोजित कार्यक्रम में अतुलनीय, अविश्वसनीय तथा अदम्य साहस के लिए अशोक चक्र लगाकर सर्वोच्च सम्मान दिया। जो विरले लोगों को ही मिलता है। भारत माता के भाल पर विजय का टीका लगाने में योगदान देने वाला यह कार्य देश की आने वाली पीढ़ियों को राष्ट्र की अस्मिता बचाने के लिए प्रेरित करता रहेगा।

रघुराजसिंह 'कर्मयोगी'
कोटा (राजस्थान)

व्हाट्सएप कहानी

एक शिक्षक ने अपने बच्चों से सवाल किया– ''अगर आपके पास 86,400 रुपये है और कोई लुटेरा 10 रुपये छिनकर भाग जाए तो आप क्या करेंगे? क्या आप उसके पीछे भागकर लुटे हुए 10 रुपये वापस पाने की कोशिश करोगे? या आप अपने बचे हुए 86,390 को हिफाजत से लेकर अपने रास्ते पर चलते रहेंगे?''

कक्षा में बहुमत ने कहा कि– ''हम 10 रुपये की तुच्छ राशि की अनदेखी करते हुए अपने बचे हुए रुपये लेकर अपने रास्ते पर चलते रहेंगे।'' शिक्षक ने कहा– ''आप लोगों का उत्तर सही नहीं है। मैंने देखा है कि ज्यादातर लोग 10 रुपये वापस लेने की फिक्र में चोर का पीछा करते हैं और परिणाम के रूप में, वे बचे हुए 86,390 रुपये भी हाथ से धो बैठते हैं।''

शिक्षक का यह उत्तर सुनकर छात्र हैरान होकर पूछने लगे– ''सर, यह असम्भव है, ऐसा कौन करता है?'' शिक्षक ने बात का रहस्य खोलते हुए कहा– ''ये 86,400 वास्तव में हमारे दिन के सैकंड हैं। (24X60X60) हम 10 सैकंड की बात को लेकर या किसी भी 10 सैकंड की नाराजगी और गुस्से में, हम बाकी के पूरे दिन को सोच, कुढ़न और जलन में गुजार देते हैं और हमारे बचे हुए 86,390 सैकंड भी नष्ट कर देते हैं।''

यह राज की बात सुनते ही कक्षा में चुप्पी छा गई। सभी विचार करने लगे कि हम सब ऐसा ही करते हैं जो हमें नहीं करना चाहिए।

समदृष्टि

बात उस समय की है जब मुम्बई में आर्य समाज मन्दिर के निर्माण के लिए एक निधि की स्थापना की गयी थी। लोग यथाशक्ति उस निधि में दान कर रहे थे। एक व्यक्ति महर्षि दयानन्द के पास आये और नम्रता से बोले– "स्वामी जी! मेरे पास दस हजार रुपये हैं। ये सारे मैं मन्दिर निर्माण में दान देना चाहता हूँ। अतः आप यह तुच्छ भेंट स्वीकार करें।"

स्वामीजी ने उसकी भावना की प्रशंसा करते हुए कहा– "मैं आपके धर्म–प्रेम से बहुत प्रसन्न हूँ। आपके हृदय में धर्म के प्रति इतना अनुराग उत्पन्न हुआ यह कम बात नहीं है, लेकिन मैं आपकी सारी जमा पूंजी लेकर आपके परिवार को संकट में नहीं डाल सकता। उस मन्दिर की क्या शोभा होगी जिसके बनने से आपका व्यापार बन्द हो जाएँ? हाँ, आपसे अधिक से अधिक एक हजार रुपया लिया जा सकता है।"

ऐसी थी स्वामी दयानन्द की समदृष्टि।

पुष्पेश कुमार पुष्प
बाढ़ (बिहार)

कौनसी राखी किसकी

तीन बहनों की राखी के धागे सुलझाकर बताइए कौनसी राखी किसकी है ?

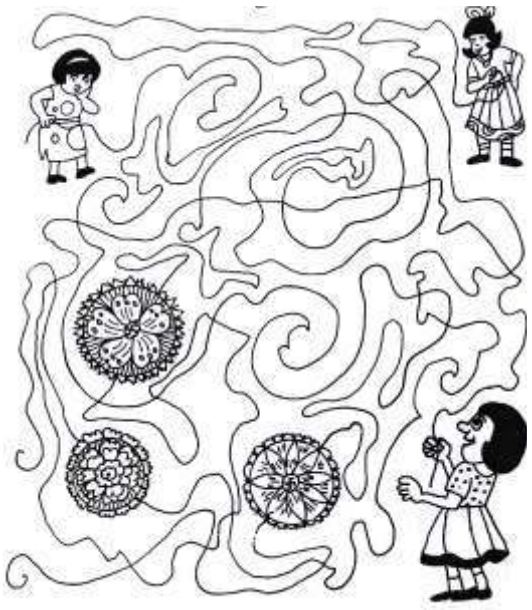

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

विश्व का दूसरा बड़ा खेल आयोजन

राष्ट्रमंडल खेल

कॉमनवेल्थ गेम्स यानी राष्ट्रमंडल खेलों को अकसर मैत्रीपूर्ण खेलों के रूप में जाना जाता है। यह एक अंतरराष्ट्रीय बहु–खेल आयोजन है, जिसमें राष्ट्रमंडल राष्ट्रों के एथलीट शामिल होते हैं। ओलम्पिक के बाद यह सबसे बड़ा वैश्विक खेल आयोजन है। इन खेलों का आयोजन पहली बार 1930 में किया गया था। 1942 और 1946 को छोड़कर, यह हर चार साल में होता रहा है। इन खेलों में वे राष्ट्र भाग लेते हैं, जो कभी न कभी इंग्लैंड के अधीन रहे हों।

राष्ट्रमंडल खेलों को 1930 से 1950 तक ब्रिटिश साम्राज्य खेलों, 1954 से 1966 तक ब्रिटिश साम्राज्य और राष्ट्रमंडल खेलों के रूप में और 1970 से 1974 तक ब्रिटिश राष्ट्रमंडल खेलों के रूप में जाना जाता था। फिर इसका नाम राष्ट्रमंडल खेल कर दिया गया। राष्ट्रमंडल खेलों का आरम्भ 1911 में लंदन में आयोजित एम्पायर फेस्टिवल के एक भाग के रूप में हुआ था। मेलविल मार्क्स रॉबिन्सन ने ब्रिटिश एम्पायर गेम्स के रूप में खेलों की स्थापना की, जो पहली बार हैमिल्टन, कनाडा में आयोजित किए गए थे।

राष्ट्रमंडल खेलों की देखरेख कॉमनवेल्थ गेम्स फेडरेशन (सीजीएफ) द्वारा की जाती है, जो खेल कार्यक्रम को भी नियन्त्रित करता है और मेजबान शहरों का चयन करता है। राष्ट्रमंडल खेलों के दौरान 15 से अधिक विभिन्न खेलों और 250 से अधिक आयोजनों में 5,000 से अधिक एथलीट खेलों में प्रतिस्पर्धा करते हैं।

वर्तमान में राष्ट्रमंडल राष्ट्रों के 54 सदस्य हैं, पर 72 टीमें राष्ट्रमंडल खेलों में भाग लेती हैं। इसका कारण यह है कि राष्ट्रमंडल खेलों की एक विशेषता है कि कई देशों के अन्दर के क्षेत्र भी राष्ट्रमंडल में प्रतिस्पर्धा करते हैं। जैसे यूनाइटेड किंगडम के चार गृह राष्ट्र (इंग्लैंड, स्कॉटलैंड, वेल्स और उत्तरी आयरलैंड) भी अलग–अलग टीमें भेजते हैं।

अब तक नौ देशों के उन्नीस शहरों ने इन खेलों की मेजबानी की है। ऑस्ट्रेलिया ने पाँच बार (1938, 1962, 1982, 2006 और 2018) राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी की है, यह किसी भी अन्य राष्ट्र की तुलना में सबसे अधिक है। दो शहरों ने एक से अधिक बार राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी की है। ये हैं, ऑकलैंड (1950, 1990) और एडिनबर्ग (1970, 1986)। भारत ने 2010 में राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी की थी।

विगत राष्ट्रमंडल खेल 4 से 15 अप्रैल 2018 तक गोल्ड कोस्ट में आयोजित किया गया था। इस बार राष्ट्रमंडल खेल 28 जुलाई से 8 अगस्त 2022 तक बर्मिंघम (इंग्लैंड) में आयोजित हो रहे हैं। वर्ष 2022 के राष्ट्रमंडल खेलों, को आधिकारिक तौर पर XXII राष्ट्रमंडल खेलों के रूप में जाना जाता है। बर्मिंघम को 21 दिसंबर 2017 को मेजबान के रूप में घोषित किया गया था। इंग्लैंड, लंदन 1934 और मैनचेस्टर 2002 के बाद तीसरी बार राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी कर रहा है। लंदन और मैनचेस्टर, कार्डिफ 1958, एडिनबर्ग 1970 और 1986 और ग्लासगो 2014 के बाद यूनाइटेड किंगडम सातवीं बार इन खेलों की मेजबानी कर रहा है।

अनिल जायसवाल
नई दिल्ली

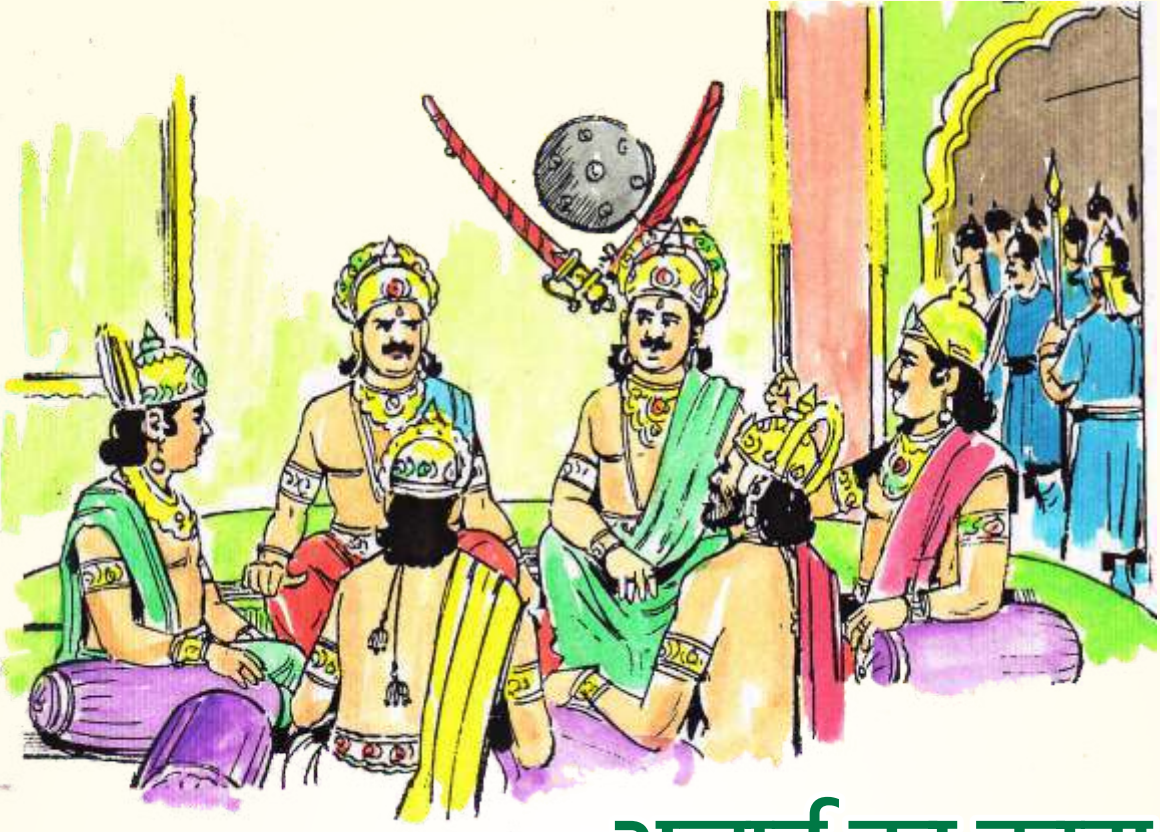

भलाई का काम

तोता बोला, बहुत पुरानी बात है, सुनो तो– ''बहुत–बहुत साल पहले जब छोटे छोटे गाँव हुआ करते थे, सड़कों की जगह कच्चे रास्ते थे। लोग अधिकतर पैदल ही आया जाया करते थे, कहीं–कहीं बैलगाड़ी और घोड़े पर भी आना जाना होता था। हर तरफ घने जंगल थे। जंगल के रास्ते से आना जाना पड़ता था। घर पहुँचने में कई–कई दिन लग जाते थे। रास्ते में बहुत बार बदमाश लुटेरे धन और कीमती चीजें लूट लिया करते थे। इसलिए लोग समूह में चलते थे। रात होने से पूर्व ही राह में पड़ने वाले किसी गाँव में ठहर जाते थे। उस समय गाँव के लोग बाहर से आये व्यक्ति का खुश हो कर अतिथि सत्कार किया करते थे, रात को भोजन खिलाते, उसकी सुरक्षा किया करते थे।

उस समय राजाओं का राज था। राजा की जिम्मेदारी थी राज्य में सुख शांति बनी रहे, सब निर्भय होकर रहें, चोरी लूटपाट जैसे अपराध न हों, राजा के सिपाही और गुप्तचर नागरिकों की सुरक्षा के लिए तैनात रहते थे, किन्तु हर जगह सिपाहियों का पहुँच पाना सम्भव नहीं था। कुछ बदमाश घने जंगलों में छिप जाते थे। जैसे ही किसी व्यापारी को आता देखते सक्रिय हो जाते। उन्होंने अपनी भाषा में कोड़वर्ड बना रखे थे, गिरोह का एक व्यक्ति पेड़ पर चढ़ कर पत्तों में छिप जाता और रास्ते को देखता रहता, जैसे ही कोई आता वह चिल्ला कर कहता– 'हर हर महादेव अर्थात माल है लूट लो' सुनते ही जंगल में छिपे लुटेरे दौड़ कर उस पर टूट पड़ते। उसका धन छीन कर भाग जाते।

उस समय मैना बिरादरी मानव की भाषा जानती थी। मैना इनसान के साथ संवाद कर सकती थी। मैना रानी ने सोचा– ''क्यों न मैं व्यापारियों की मदद करूँ, मैं उन्हें पहले से ही आगाह कर दूँ तो, वे लुटने से बच जायेंगे।''

घने जंगल के रास्ते में पेड़ पर रानी मैना अपना ड़ेरा ड़ाल दिया करती। बीच–बीच में उड़ान भर कर रास्ते पर नजर रखती। जैसे ही कोई व्यापारी आता वह सावधान करते हुए कहती– ''सुनो भाइयों, आगे खतरा है लौट जायें, आगे लुटेरे हैं लौट जायें।''

''कौन बोल रहा है, सामने आओ।'' ''नमस्ते मैं रानी मैना हूँ, आपकी हितैषी आगे लुटेरे हैं आपको लूट लेंगे, आप लौट जायें, यहीं पास के गाँव में विश्राम करें। खतरा टलने पर ही निकलें, मैं उन पर निगाह रख रही हूँ। जैसे ही वे चले जायेंगे, मैं जोर से चिल्लाकर कहूँगी, जागो काम पर चलो, तब आप निकलना।''

जब लुटेरे न होते तो वह कहती– ''बढ़ते चलो रास्ता साफ है।'' रानी मैना के इस काम में उनकी दोस्त सोनी मैना ने बड़ी मदद की। सोनी मैना रानी मैना के लिए कुछ खाने को ले आती, साथ बैठ कर बतिया लेती। रानी को खाने के लिए यहाँ वहाँ जाना नहीं पड़ता, सारा दिन आते जाते लोगों पर नजर रखती। इस तरह रानी मैना की सतर्कता से व्यापारी लुटने से बचने लगे। लूटपाट की वारदातें कम हो गईं। व्यापारी खुश थे। राजा को पता चला व्यापार अच्छा चल रहा है। व्यापारी खुश हैं। लूटपाट बन्द है, तो राजा ने मन्त्री और गुप्तचरों को बुलाया। उन्हें शाबासी देते हुए अच्छे काम की सराहना करते हुए इनाम भी दिया, तब उन्होंने सच बताते हुए कहा– ''महाराज! ये काम एक नन्ही मैना का है, वह लुटेरों से व्यापारियों को सावधान कर देती है।''

राजा यह सब जानकर बहुत अचंभित हुआ और खुश भी हुआ। उन्होंने मैना का सम्मान करने उसे राजमहल बुलवाया। गुप्तचर ने रानी मैना को राजा की आज्ञा सुनाई, रानी मैना राजा के बुलावे पर अपनी दोस्त सोनी के साथ राजमहल पहुँची। मैना ने महाराज की जय हो कहते हुए राजा का अभिवादन किया। राजा बोले– ''रानी मैना मैं तुम्हारे काम से बहुत खुश हूँ, तुमने राज्य के लोगों की निःस्वार्थ सेवा की है, मैं तुम्हारे इस भलाई के काम से बहुत खुश हूँ।'' ''महाराज राज्य का पंछी होने के नाते ये तो मेरा कर्त्तव्य है कि मैं भी राज्य के काम आऊँ।'' ''मैं तुम्हें तुम्हारे इस महान कार्य के लिए सम्मानित करते हुए तुम्हें आज से 'राज मैना' घोषित करता हूँ।''

व्यापारियों ने भी रानी मैना का स्वागत सम्मान किया, धन्यवाद दिया तथा रानी मैना से पूछा– ''हमारी तरफ से तुम्हें क्या सेवा चाहिए कृपया निःसंकोच बताओ।'' रानी ने कहा– ''मुझे कुछ नहीं चाहिए, मैं सिर्फ इतना चाहती हूँ कि हर गाँव में पंछियों के लिए दाना पानी की व्यवस्था हो, पेड़ों की कटाई बन्द हो। ज्यादा से ज्यादा पेड़ पौधे लगाए जायें।'' ''अवश्य, हम सभी गाँवो में ये व्यवस्था कर देंगे।'' रानी मैना की चर्चा पूरे राज्य में होने लगी। लुटेरों का धंधा चौपट हो गया। लुटेरों को बड़ा गुस्सा आया। लुटेरों ने रानी मैना को ढूँढ कर मारना चाहा, किन्तु सफल न हो सके। वे खुद राजा के सिपाहियों द्वारा पकड़े गये, उन्हें कड़ी सजा दी गई।

रानी मैना को राजा ने अपनी गुप्तचर नियुक्त कर दिया। रानी मैना पूरे राज्य में घूम–घूम कर प्रजा के कष्ट जान सुनकर राजा तक पहुँचाने लगी। राजा प्रजा के कष्ट दूर करने लगे। राजा के मन्त्री भी कार्यशील हो गये। राज्य में सभी सुख चैन से रहने लगे। इस तरह दूसरे का हित सोचने वाली रानी मैना सबकी प्रिय बन गई।

डॉ. मीरा रामनिवास वर्मा
गांधीनगर (गुजरात)

चित्र पहेली

इन टुकड़ों को जोड़कर नीचे दिया गया चित्र बनाओ और उसमें रंग भरो।

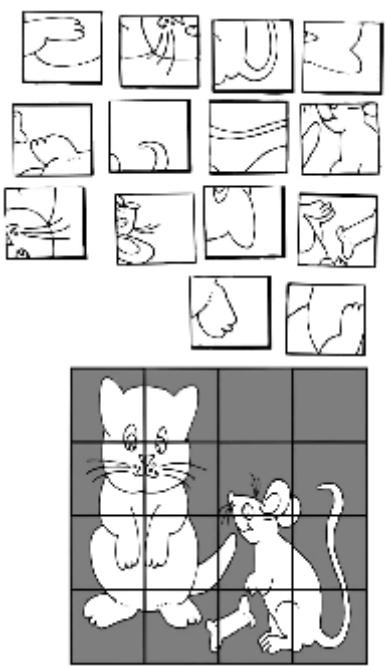

धर्मपाल डोगरा 'मिन्टू', उना (हिमाचल प्रदेश)

पढ़ो और जानो

इन प्रश्नों के उत्तर इसी अंक में हैं, आपको उन्हें ढूँढ़ना है।

1. आखिर डरना क्यों? कहानी से क्या शिक्षा मिलती है ?
2. हारिल पक्षी की क्या खास विशेषता है ?
3. लता मंगेशकर का अंतिम गाना कौन सा है?
4. रानी मैना ने क्या मांग रखी ?
5. रिक्की और विक्की की कौन सी बात आपको अच्छी लगी?
6. नाटिका में बाजी का व्यवहार कैसा है ?
7. सृष्टि की ड्राइंग को पुरस्कार के लिए क्यों चुना गया ?
8. मित्रता दिवस कब मनाया जाता है ?
9. इन्द्र की सलाह क्या थी ?
10. चीनू की माँ ने देशभक्ति के बारे में क्या समझाया ?

उत्तरमाला

दस सवाल : दस जवाब

(1) (अ) नो पार्किंग (ब) रेल्वे क्रॉसिंग (स) स्कूल (द) U टर्न
(2) इंतजार करें (3) पैदल यात्री (4) बायीं (Left) (5) हॉस्पिटल एवं स्कूल (6) 11 से 17 जनवरी (7) दायीं ओर से (Right Side) (8) 108 या 1073 (9) नेशनल हाइवेज ऑथिरिटी ऑफ इंडिया (10) सिर की सुरक्षा होती है

अन्तर ढूँढ़िए

(1) साइकिल अतिरिक्त (2) सूरज का आकार बड़ा (3) लड़की की एक आँख गायब (4) लड़की के मोजे का रंग अलग (5) गमले का आकार बड़ा (6) बादल का रंग अलग (7) तोता अतिरिक्त (8) कार गायब

दिमागी कसरत

(1) दर्जा, कक्षा (2) किताब, पुस्तक (3) अध्यापक, शिक्षक (4) इम्तहान, परीक्षा (5) अंक, मार्क (6) वक्त, समय (7) कलाक, घंटा, (8) समानता, एकरूपता (9) परिश्रम, मेहनत (10) मित्र दोस्त

बूझो तो जानें

: (1) तोता (2) कोयल (3) कौआ (4) मुर्गा (5) बिल्ली

: सदस्यों से :
कुछ विशेष कारणों से बच्चों का देश का यह अगस्त-सितम्बर माह का संयुक्त अंक है। अगला अंक अक्टूबर का प्रकाशित होगा।

वर्ग पहेली

1 भ	2 ग	3 वा	4 न	■	5 न	र	6 क
7 ग	ल	त	फ	ह	मी	■	ल
8 त	न	■	र	■	■	9 ना	म
सिं	■	10 म	त	11 वा	ला	■	का
12 ह	13 म	ला	■	14 न	भ	15 च	र
■	16 त	ल	17 घ	र	■	म	■
18 रा	ल	■	ना	■	19 ह	की	20 म
21 ख	ब	र	■	22 ह	क	ला	ना

सुडोकू

6	4	9	3	8	5	2	1	7
5	3	7	2	9	1	8	6	4
8	1	2	7	6	4	9	3	5
4	2	5	1	3	7	6	8	9
9	8	1	5	2	6	4	7	3
3	7	6	8	4	9	5	2	1
1	9	3	6	5	2	7	4	8
7	6	4	9	1	8	3	5	2
2	5	8	4	7	3	1	9	6

देवांश बड़ाला, कक्षा 3, डोंबिवली

नेहा मेघवाल, कक्षा 5, उदयपुर

इशुप्रिय जैन, कक्षा 2, पनवेल (मुम्बई)

मेरे अच्छे पापा

मेरे प्यारे पापा, सबसे न्यारे पापा
अँगुली पकड़ कर चलना सिखाया
हर ख्वाइश पूरी करते पापा
हर मुश्किल से लडना सिखाते पापा
सही राह पर चलना सिखाते पापा
मेरी एक खुशी के लिए
सब कुछ सह जाते पापा
संग खेलते मेरे पापा
सारी खुशियाँ देते पापा
आपसे बढ़ कर न कोई,
इस दुनिया में पापा
मेरे पापा, सबसे प्यारे पापा।।

अर्चित जैन
कक्षा 6, उदयपुर

हीम संघवी, कक्षा 8, मुम्बई

जिनप्रिया जैन, कक्षा 4, पनवेल (मुम्बई)

खुशी अब्बानी, सूरत

आप भी अपनी कलम और कूँची का कमाल हमें मोबाइल नं. 9351552651 पर या पत्रिका के पते पर भेजें।

राष्ट्रीय खेल दिवस और जल संरक्षण पर संदेश युक्त पोस्टर

कविता, पायल

अंकिता परिहार

अनिता चौधरी

मनीषा परिहार

भंवरी मीणा

अंजल कुमारी, अंकिता

धामू मीणा

पुष्पा

गंगोत्री

काजल

जमुना

राधिका मीणा

दीपिका, भावना मीणा

आओ हम सब खेलें खेल,
मिलकर बन जाये रेल
हॉकी,फुटबॉल हो या हो शतरंज
खेले ऐसे ,सब रह जाये दंग
हम ऐसी एक टीम बनाये ,
देश – विदेश में नाम कमाए

दक्षा चंचल (रोहट)

सामग्री सौजन्य :
आई. आई. एफ़. एल. फाउंडेशन द्वारा गांवों में संचालित सखियों की बाड़ी केंद्र,
ब्लॉक- लसाड़िया (उदयपुर), रोहट (पाली)।

नन्हा अखबार

देश व दुनिया की खबरें जो आप जानना चाहेंगे

पिता-पुत्री की जोड़ी ने उड़ाया विमान

भारतीय एयर कमोडोर संजय शर्मा और उनकी बेटी फ्लाइंग ऑफिसर अनन्या शर्मा ने कर्नाटक के बीदर में एक हॉक-132 एयरक्राफ्ट में उड़ान भरी। ऐसा करके पिता-बेटी की इस जोड़ी ने भारतीय वायुसेना में इतिहास रच दिया है। 2016 से भारतीय वायु सेना में शामिल यह महिला फाइटर पायलट अन्य लड़कियों के लिए प्रेरणा है जो फाइटर पायलट बन देश की वायु सेना का हिस्सा बनना चाहती है।

सड़क निर्माण का अद्भुत रिकार्ड

भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI) ने 105 घंटे में 75 किलोमीटर लम्बी सीमेंट की सड़क बनाकर नया विश्व रिकॉर्ड बनाया है। केंद्रीय भूतल परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने एलान किया कि एनएचएआई ने 75 किमी लंबी सिंगल लेन में बिटुमिनस कंक्रीट बिछाने का एक नया गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया है।

मोबाइल छोड़कर जिन्दगी जिएँ

सेलफोन के आविष्कारक 93 साल के मार्टिन कूपर अपने ही आविष्कार से निराश एवं दुःखी है। उनकी निराशा की वजह है लोगों का जरूरत से ज्यादा मोबाइल फोन का इस्तेमाल करना। इस अति को देखते हुए उन्होंने दुनिया भर के लोगों को सलाह दी है कि मोबाइल पर समय बरबाद करने की बजाय असली जिन्दगी जिएँ। एक इंटरव्यू में उन्होंने बताया कि वह खुद 24 घंटे में से सिर्फ पाँच प्रतिशत समय मोबाइल देखते हैं। चीन के बाद भारतीय यूजर्स विश्व में सर्वाधिक ऐप डाउनलोड करते हैं।

पी.एम ने किया राष्ट्रीय प्रतीक का अनावरण

प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने 11 जुलाई को नए संसद भवन की छत पर बने अशोक स्तम्भ का अनावरण किया। राष्ट्रीय प्रतीक चिन्ह 9500 किलोग्राम का है और कांस्य से बना है। इसकी ऊँचाई 6.5 मीटर है। अशोक स्तम्भ की प्रतिकृति को जयपुर में मूर्तिकार लक्ष्मण व्यास के निर्देशन में तैयार किया है।

अवनि लेखरा बनी दुनिया की नम्बर - 1 शूटर

ताजा रैंकिंग के मुताबिक अवनि लेखरा आर 2–10 एम एयर राइफल महिला एसएच 1 और आर 8–50 एम राइफल थ्री-पोजीशन में नम्बर एक रैंकिंग पर पहुँच गई हैं। अवनि ने टोक्यो पैरालम्पिक में गोल्ड मेडल जीता था। 20 साल की अवनि ने इतिहास रचते हुए 10 मीटर एयर राइफल एसएच1 प्रतियोगिता में गोल्ड और 50 मीटर राइफल 3-पोजीशन एसएच1 में ब्रोन्ज मेडल जीता था। अवनि पैरालम्पिक गोल्ड जीतने वाली पहली भारतीय महिला भी हैं।

सबसे लम्बा खत

केरल के इडुकी जिले के पीरमाडे की एक भारतीय महिला कृष्णाप्रिया ने यह खत अपने नाराज भाई को लिखा है और इस लम्बे खत को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में शामिल कराने में जुटी हुई है। इस खत को पूरा करने में इनको 12 घंटे का समय लगा जिसकी कुल लम्बाई 434 मीटर तक पहुँच गई और वजन 5 किलो हो गया।

काठ के कीड़े खाने वाला कठफोड़वा

कठफोर यानी कठफोड़वा पंछी की भारत में दो दर्जन तो दुनिया में 200 प्रजातियाँ पाई जाती हैं। लोग धोखे से हुदहुद को कठफोड़वा समझ लेते हैं। कठफोड़वा को टकटोर, कठफोर कास्टकूट बाभ्रभाल, शलकोदर, ललपेटा ,वामन, स्वर्ण पिष्ठ सौ रन या बढ़ई चिड़िया कहा जाता है। अँग्रेजी में वुड पैकर कहते हैं। ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, मेडागास्कर सहित कुछ देशों को छोड़कर कठफोड़वा पूरी दुनिया में पाया जाता है।

चमकीले चटक रंग और लाल सिर के कारण कठफोड़वा आसानी से पहचाना जा सकता है। पेड़ों की डाल और तनों पर यह पंछी ठक–ठक करता मिल जाएगा। अपनी तीखी तेज चोंच से कठफोड़वा पेड़ के तनों पर बहुत तेजी से प्रहार करता है और पेड़ की सूखी पपड़ी में छिपे छोटे–छोटे कीड़े मकोड़ों, चीटियों, दीमक आदि को चट कर जाता है। छोटे कठफोड़वा की लम्बाई 6 इंच और सबसे बड़े कठफोड़वा की लम्बाई डेढ़ फीट तक पाई गई है।

नर और मादा पंछियों में बड़ा अन्तर होता है। मादा पंछी फरवरी से लेकर अप्रैल तक किसी ऊँचे पेड़ के कोटर में या खुद छेद करके तीन या चार अंडे देती है। अंडे से बच्चे निकलने के बाद सभी अलग–अलग कीड़ों की तलाश में निकल जाते हैं। अकेले ही कठफोड़वा जिन्दगी भर कीड़ों की तलाश में भटकता रहता है। भारत, श्रीलंका, बर्मा, बांग्लादेश आदि देशों में पाया जाने वाला कठफोड़वा एशिया उपमहाद्वीप का सुपरिचित पंछी है। कुछ कठफोड़वा पंछी हिमालय में चीड़ सागौन के पेड़ों में गहरे छेद कर अपने अंडे देते हैं। कठफोड़वा हिमालय से लेकर दक्षिण भारत तक किसी न किसी रूप में मिल जाता है।

सबसे छोटा कठफोड़वा करीब 6 इंच का होता है, इसे टकटोर कहते हैं। इसका ऊपरी हिस्सा लाल और भूरा होता है। पंखों पर गहरे रंग की बिंदिया रखी होती हैं। गाँव शहरों के किनारे बाग बगीचों में यह पक्षी पेड़ों के तनों में चोंच से ठक–ठक करता दिखाई देता है।

लालगंज की पीठ वाला कठफोड़वा का पृष्ठ भाग कत्थई रंग का होता है। इसकी पीठ कत्थई रंग की काली धारियों वाली होती है। सोन पीठ कठफोड़वा करीब 11 इंच लम्बा होता है। इसकी पीठ सुनहरी टाँग सिलेटी और हरे रंग की होती हैं। गर्दन ऐंठा कठफोड़वा सलेटी और भूरे रंग का होता है। यह भी करीब दस इंच लम्बा होता है। कठफोड़वा पंछी लाल हरे नीले चटक रंगों और लाल काले रंग की कलंगी और सिर पर सुर्ख चमकीला लाल रंग के कारण अलग से पहचान में आ जाता है। कुछ कठ फोर पंछी कश्मीर और हिमालय से सर्दियाँ बिताने भारत आते हैं और कुछ कठफोड़वा पंछी भारत के बारहमासा निवासी पक्षी हैं।

हुद हुद पंछी की चोंच लम्बी चिमटी जैसी और नीचे मुड़ी हुई होती है जबकि कठफोड़वा पंछी की चोंच सीधी और तेज मजबूत नुकीली होती है। अपनी तेज नुकीली चोंच से कठफोड़वा एक सैकंड में पेड़ के तने में 20 बार वार करता है। पेड़ों के सूखे तने में छिपे लारवा, छोटे–छोटे कीड़े मकोड़े चीटियाँ और पेड़ में लगने वाली दीमक को कठफोड़वा पंछी अपनी तेज लिसलिसी जीभ से पकड़ कर खा जाता है।

कठफोड़वा पक्षी बहुत कम जमीन पर आते हैं। यह अकेले ही वृक्षों पर अपना शिकार तलाशते रहते हैं और रात में किसी डाली, बिजली के तार या ऊँचे पेड़ों की टहनी में बैठ कर सो जाते हैं। अंडों से निकले बच्चों की देखभाल नर और मादा दोनों करते हैं। कठफोड़वा की कुछ जातियाँ केले के तने में छेद कर उससे पानी पीती हैं। कुछ कठफोर पंछी फलों का गूदा भी खाते हैं।

शिवचरण चौहान
मनेथू कानपुर देहात (उत्तर प्रदेश)

आप सबको यह बताते हुए मुझे हैरानी हो रही है कि मैं खाने को लेकर बड़ी चूजी हूँ। कुछ लोग तो खाने के लिए ही जीते हैं लेकिन मैं थोड़ी अजीब सी हूँ। मैं खाने में इतनी दिलचस्पी नहीं लेती, जितना नींबू पानी, जूस, आइसक्रीम यह सब खाने–पीने में। कभी–कभी मुझे पानी–पूरी, रसगुल्ले, जलेबी, बैंगन का भरता और इडली साँभर, उत्तपम, नारियल चटनी पसन्द है।

सुनने में थोड़ा अजीब लगेगा पर मुझे सबसे ज्यादा कड़ी और खिचड़ी बहुत पसन्द है। यह स्वास्थ्य के लिए भी अच्छी होती है और पचाने में भी ज्यादा समय नहीं लेती है। इसमें सब्जियाँ डाल दो तो कहना ही क्या! कड़ी भी दो तीन तरीके से बनती है उनमें से मुझे सिंधी, गुजराती एवं राजस्थानी कड़ी ज्यादा प्रिय है। तबियत बिगड़ जाए या कुछ भी खाने का दिल ना करे तो सभी आपको कड़ी–खिचड़ी खाने की ही सलाह देंगे। इसे बनाने में भी ज्यादा समय नहीं लगता है। कभी आप अहमदाबाद के अक्षर धाम में जाएँ तो वहाँ की स्वामी नारायण खिचड़ी जरूर खाएँ, यकीन मानिए आप अँगुलियाँ चाटते रह जाएँगे।

मुझे नहीं पसन्द है वह तराई की सब्जी है क्योंकि यह थोड़ी सी गीली–गीली होती है और मुझे जंक फूड जैसे पिज्जा, बर्गर बिलकुल पसन्द नहीं है।

प्रिशा चौखड़ा, कक्षा 8, थाणे (महाराष्ट्र)

बच्चों की कलम

आपको खाने में क्या है
पसन्द और नापसन्द
इस विषय पर प्राप्त विचार

Hello everyone! I love every type of food if my mother makes it. I love pizza because it is very cheesy & it has lots of veggies with jalpenas & various types of herbs & sauces. I love different types of sandwich as well like Dahi sandwich, Potato sandwich & toast because they have some good veggies stuffed in it.

I also love dhokla because it is very sweet & looks like a 'Vada'. I also love 'Panner ki sabji' because it's gravy is so tasty, temptie & creamy as well. I do not like 'Karela ki sabji' & 'Loki ki sabji' because they are very sour.

Tanishq bararia, Class-6, Bangaluru

जन्मदिन की बधाई

22 अगस्त

जयशंकर
श्री डूंगरगढ़

25 अगस्त

दृष्टि शर्मा
बीकानेर

13 सितम्बर

देवांशी साबू
दिल्ली

22 सितम्बर

अद्युति तिवारी
भीलवाड़ा

26 सितम्बर

अर्चिता तातेड़
कोलकाता

Disguising can bring you trouble

-Venu Variath

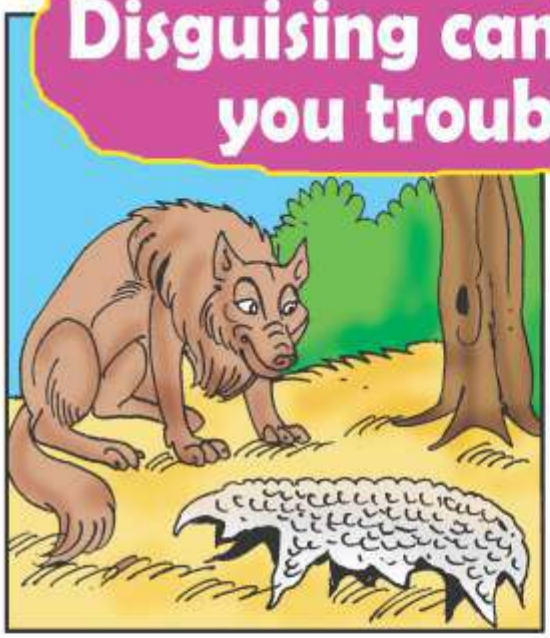

Once, there lived a cunning fox. One day, he came across a sheepskin.

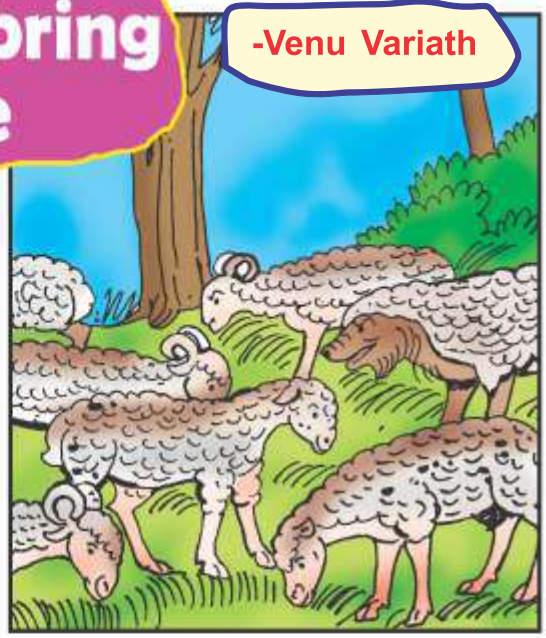

"Using this sheepskin I can disguise and easily catch the sheep," the fox thought. He quickly wore the skin and went to the flock of sheep.

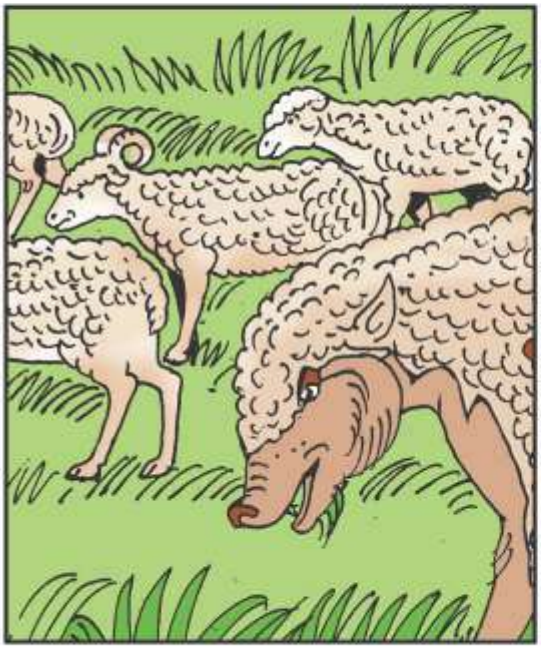

"I can kill and eat the sheep when I get a chance. For the time being, I will move quietly with them," the fox decided.

In the evening, the farmer led the sheep home. The fox also went with them.

That day, the farmer had visitors. "Today I will kill a sheep and prepare a tasty meal for my guests," the farmer thought.

Thinking that he was seizing a sheep he caught the fox. Now, the fox was scared.

He ran out of the farmer's house. The farmer thought that the sheep was escaping and ran after the fox.

While running, the fox fell into an abandoned well. He was soon dead.

-Venu Variath

Match the following

Match the pictures with their names.

lotus
bat
car
rose
computer
bag
apple
bicycle

Picture Crossword

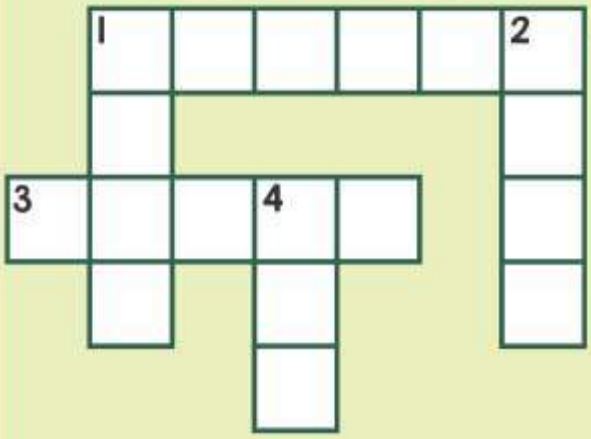

1 (across)

4 (down)

1 (down)

2 (down)

3 (across)

बच्चों का देश द्वारा ऑनलाइन संचालित

बच्चों का क्लब

आजादी का अमृत महोत्सव

आप भी इस क्लब के सदस्य बनना चाहे तो 9414343100 पर अपना नाम, पता, उम्र, कक्षा, रुचि, पत्रिका का सदस्यता क्रमांक आदि विवरण लिखकर व्हाट्सएप मैसेज करें। इसकी सदस्यता नि:शुल्क है। सदस्यता के लिए आयु सीमा 7 से 15 वर्ष है।

महक गुप्ता, कक्षा 10, बीकानेर

जयशंकर, कक्षा 5, बीकानेर

अक्षय कुमार, कक्षा 8, बीकानेर

दृष्टि शर्मा, कक्षा 8, बीकानेर

अश्मि दफ्तरी, कक्षा 6, बीकानेर

स्नेहा चौखाड़ा, कक्षा 11, थाणे

कीर्ति गोयल, कक्षा 4, सिलीगुड़ी

समृद्ध सिन्हा, कक्षा 2, आगरा

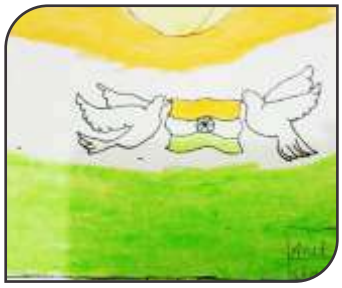

अमित, कक्षा 1, बीकानेर

RNI No. 72125/99
Postal Reg. No.: RJ/UD/29-157/2022-24
Posting Date : 27 & 29
Posted at : Kankroli

आचार्य विनोबा भावे

जन्म : 11 सितम्बर, 1895 ■ निधन : 15 नवम्बर, 1982

आपका मूल नाम विनायक नरहरि भावे था। भारत के स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, सामाजिक कार्यकर्ता तथा प्रसिद्ध गांधीवादी नेता थे। उन्हें भारत का राष्ट्रीय अध्यापक और महात्मा गांधी का आध्यात्मिक उत्तराधिकारी समझा जाता है। उन्होंने देश भर में भूदान आन्दोलन चलाया और सर्वोदय दर्शन दिया।। महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र के गाँव गागोदा में जन्मे विनायक में गणित की सूझ-बूझ और तर्क-सामर्थ्य, विज्ञान के प्रति गहन अनुराग, परम्परा के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण और स्वतन्त्र सोचने की कला थी। उनमें धर्म और संस्कृति के प्रति आस्था, प्राणिमात्र के कल्याण की भावना, जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, सर्वधर्म समभाव, सहअस्तित्व के विशेष गुण थे।